वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
2007-2008

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT

1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च, 2008 तक

1ST APRIL 2007 TO 31ST MARCH 2008

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक प्रतिवेदन
2007-2008

विषय-सूची

संकल्पना			1
संगठन			3
न्यास का निर्माण			5
भावी मानचित्र			5
नई योजनाएं			7
आधुनिकीकरण			7
सारांश			9
कलानिधि			11
कार्यक्रम	:	संदर्भ पुस्तकालय	11
कार्यक्रम	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार	20
कार्यक्रम	:	सांस्कृतिक सायंत्रिक संचार	27
कलाकोश			**30**
कार्यक्रम क	:	कलातत्त्वकोश	30
कार्यक्रम ख	:	कलामूलशास्त्र	30
कार्यक्रम ग	:	कलासमालोचन	34
कार्यक्रम घ	:	कलाओं का विश्वकोश	34
कार्यक्रम ड	:	क्षेत्र अध्ययन	35
कार्यक्रम च	:	नारीवाद	37
जनपद सम्पदा			40
कार्यक्रम क	:	मानव जाति वणर्नात्मक संग्रह	40
कार्यक्रम ख	:	आदि दृश्य	41

कार्यक्रम ग	:	जीवन शैली अध्ययन	46
कार्यक्रम घ	:	पूर्वोत्तर अध्ययन कार्यक्रम	51
कलादर्शन			60
कार्यक्रम क	:	प्रदर्शनियां	60
कार्यक्रम ग	:	स्मारकीय व्याख्यान	63
कार्यक्रम घ	:	सार्वजनिक व्याख्यान	63
सूत्रधार			67
क	:	कार्मिक	67
ख	:	सेवा एवं आपूर्ति विभाग	67
ग	:	भवन निर्माण परियोजनाएं	67
अनुबन्ध			
I	:	न्यास के सदस्य	69
II	:	कार्यकारिणी समिति के सदस्य	70
III	:	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची	71
IV	:	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची	74

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

ANNUAL REPORT FOR THE PERIOD

1st April 2007 to 31st March 2008

Contents

Introduction			75
Organisation			76
Formation of the Trust			78
Future Map			78
New Scheme			79
Modernisation			80
Summary			81
KALĀNIDHI			82
Programme A	:	Reference Library	83
Programme C	:	Cultural Archives	90
Cultural Informatics Lab			96
KALĀKOŚA			98
Programme A	:	Kalātattvakośa	98
Programme B	:	Kalāmūlaśāstra	99
Programme C	:	Kalāsamālocana	101
Programme D	:	Encylopaedia of Arts	102
Programme E	:	Area Studies	102
JANAPADA SAMPADĀ			106
Programme A	:	Ethnographic Collection	106
Programme B	:	Adi Drisya	107
Programme C	:	Lifestyle Studies	111
KALĀDARŚANA			124
Exhibitions			124
Memorial Lectures			127
Public Lectures/Discussions			127

SŪTRADHĀRA **130**

Personnel 130
Services and Supply 130
Building Projects Committee 131

ANNEXURES

I : The Indira Gandhi National Centre for the Arts Board of Trustees (as on 31.3.2008) 132

II : The Indira Gandhi National Centre for the Arts Members of the Executive Committee (as on 31.3.2008) 133

III : List of officers of the IGNCA, including Senior /Junior Research Fellows in the IGNCA (as on 31.3.2008) 134

IV : List of the IGNCA Publications during the year 2007-08 138

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट 2007-2008

संकल्पना

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ. गाँ. रा. क. के.) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, इसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, समाजिक-संरचना और ब्रहमाण्ड-व्यवस्था के साथ सम्बद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल है-लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और रेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएँ, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाओं तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है पर भविष्य में इसके क्षेत्र का प्रसार अन्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों तक हो जाएगा। अनुसन्धान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र, कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। अपने समस्त कार्यकलाप में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक एवं अर्न्तविषयक होगा। इस केन्द्र का उद्देश्य कला से संबंधित क्षेत्रों में समान विश्व विचारों की सरमाविता करते हुए भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच तथा भारत और विश्व के समुदायों के बीच समन्वय, छानबीन, अध्ययन करना और संवाद को पुर्नजीवित करना है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कलाओं के विषय में उपागम की विलक्षणता इस तथ्य में परिलक्षित है, कि यह लोक और शास्त्रीय संगीत, मौखिक और श्रुत, लिखित और उच्चरित और पुराने और आधुनिक में पृथक्करण नहीं करती। यहां विभिन्न क्षेत्रों के बीच संयोजन और अविच्छिन्नता पर बल दिया जाता है जो अन्ततः मनुष्य को मनुष्य के साथ और मनुष्य को प्रकृति के सहजीवन से जोड़ता है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने प्रकाशनों, अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय विचारगोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों और व्याख्यान मालाओं में अपने शैक्षणिक और अनुसंधान कार्य को व्यक्त करता है। स्कूल और अन्य शिक्षा संस्थान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रसार कार्यक्रमों के केन्द्र के अन्तर्गत आते हैं। बहु विषयक भू-दृश्य अध्ययनों द्वारा यह अनुसंधान को पूर्ण बनाता है ताकि विकास में सांस्कृतिक निवेशों को उत्प्रेरक किया जा सके।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

- लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।
- कला, मानविकी, और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसन्धान एवं प्रकाशन का कार्य।
- सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन व सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय एवं लोक प्रभाग स्थापित करना।
- प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।
- दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक सूझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।
- भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना।
- विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक एवं गतिशील तत्त्वों को स्पष्ट करना।

- भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना।
- कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार-तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करवाने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु केन्द्र, संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु प्रक्रियात्मक रूप से सम्बद्ध, पाँच प्रभागों के माध्यमों से कार्य करता है।

कलानिधि इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान हेतु प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए, बहुविध संग्रहों से युक्त एक सांस्कृतिक-सन्दर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक धरोहर पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक तथा (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार और कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह भी हैं।

कलाकोश प्रभाग आधारभूत अनुसंधान का कार्य करता है और बहु-परत और बहु विषयक आयामों और आकस्मिक संबंधों में बौद्धिक परम्पराओं की छानबीन करता है। अनुसंधान और प्रकाशन प्रभाग के नाते यह कलाओं को सांस्कृतिक प्रणाली के अभिन्न ढांचे के भीतर रखने का प्रयास करता है और शाब्दिक को मौखिक और दृश्य को श्रुत, जीवन और कलाओं और सिद्धांत को व्यवहार से जोड़ता है। इससे निम्निलिखित के लिए दीर्घावधि कार्यक्रम आरंभ किए है:-

(क) कला तत्त्वकोश- कलाओं और दस्तकारियों में आधारभूत तकनीकी शब्दावलियों के आधार पर मूलभूत संकल्पनाओं और अंत: विषयक शब्दावलियों का शब्दकोश, (ख) कलामूलशास्त्र-भारतीय कलाओं में मूलभूत पाठों की श्रृंखला; (ग) कलासमालोचना-भारतीय कलाओं पर समीक्षात्मक साहित्य का पुर्नमुद्रण, (घ) भारतीय कलाओं पर एक बहु-खंडीय विश्वकोश; और (ड.) क्षेत्र अध्ययन।

जनसम्पदा प्रभाग कलाकोश के कार्यक्रमों का पूरक होता है। इसका केन्द्र-बिन्दु ग्रामीण और छोटे आकार के समाजों की समृद्ध रंगबिरंगी विरासत के पाठ से संदर्भ में बदल जाता है।

इसके कार्यकलापों का केन्द्र बिन्दु जीवनशैली जिन्हें लोक परम्परा कहते हैं और जो एक समुदाय के इर्द गिर्द घूमती है और सम्पदा जो किसी क्षेत्र के इर्द गिर्द घूमती है के अध्ययन कार्यक्रमों पर होता है। जनपद-सम्पदा यह प्रभाग (क) लोक एवं जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री का प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुतियाँ करता है, (ग) भारतीय सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने हेतु जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन-शैली के अध्ययन की व्यवस्था करता है। इसके साथ-साथ इस प्रभाग ने (घ) एक बाल रंगशाला स्थापित की है तथा एक (ड.) संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने की भी सोच रहा है।

कलादर्शन प्रभाग कला और संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषय संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों एवं प्रस्तुतियों के लिए एक मंच अपलब्ध कराता है। बच्चों के लिए कार्यक्रम, बालजगत, इस प्रभाग के कार्यक्रमों के अन्तर्गत आता है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दृश्य और श्रव्य रूपों में अनुसंधान का प्रचार करते हुए यह भारत और विश्व के बीच आदान-प्रदान का मार्ग खोल देता है।

संस्था के शैक्षणिक स्कन्ध अर्थात् कलानिधि एवं कलाकोश अपना ध्यान मुख्यतः बहुविध मूल एवं अनुषंगिक सामग्री के संग्रह पर केन्द्रित करते हैं। ये इसके लिए आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, आकार-आकृति के सिद्धन्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। यह कार्य वे सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) एवं निर्वचन (मार्ग) के स्तर पर इनकी व्याख्या के रूप में करते हैं। जनपद-सम्पदा एवं कलादर्शन, लोक, देश एवं जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्यकलाप तथा जीवन-शैली और मौखिक परम्पराओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। कुल मिलाकर, चारों संभागों के कार्यक्रम कलाओं को, जीवन एवं अन्य कलेतर अनुशासनों से उनके सम्बन्ध को, वास्तविक सन्दर्भों में प्रस्तुत करते हैं। सभी संभागों की अनुसंन्धान, कार्यक्रम-निर्माण व फलावाप्ति की प्रतिवधियाँ समान हैं। वैसे, हर संभाग का कार्य, अन्य संभागों के कार्यक्रमों का पूरक हैं।

सांस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार (सी आई एल) की स्थापना वर्ष 1994 में यूएनडीपी की सहायता से हुई। यह एक विश्व-स्तर प्रलेखन यूनिट के रूप में उभर कर सामने आई है जो उस तरीके को प्रदर्शित करती है जिसमें सांस्कृतिक धरोहर को जीवन और पर्यावरण, जिसमें मानव और अमानव, जिसमें जैव और अजैव समुदाय शामिल होते हैं, के जीवन के प्रबन्ध के लिए धारणीय नीति के आधार के रूप में संस्कृति का समग्र और समेकित बोध वस्तुतः पुनः सृजित किया जा सकता है। दुलर्भ पांडुलिपियां, प्रस्तुकों, फोटोग्राफों, स्लाइडों और केवल

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के ही दृश्य-श्रव्य संग्रहों के लिए ही नहीं बल्कि संस्कृति संभाग में कार्यरत अन्य संगठनों के संग्रहों के लिए अंककरण के लिए भी केन्द्र बिन्दु के रूप में काम करता है।

सूत्रधार संभाग अन्य सभी संभागों को प्रशासनिक प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएं उपलब्ध कराता है।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ-16-7/86-कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, 24 मार्च, 1987 को नई दिल्ली में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का विधिवत् गठन एवं पंजीकरण किया गया। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा है।

वर्तमान न्यास का 17 मई, 2007 को एफ 16-23/2005 के द्वारा पुनगर्ठित किया गया और न्यास के अध्यक्ष का चुनाव 19 जून, 2007 को हुआ। उसी दिन कार्यकारिणी समिति का गठन भी किया गया। न्यासियों और 31 मार्च 2008 को कार्यरत् कार्यकरिणी के सदस्यों के नाम अनुबन्ध 1 और 11 में दिए गए हैं।

भावी मानचित्र

कलाओं के क्षेत्र में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संस्थान के रूप में उभर कर आया है। इसने एक व्यापक कार्यक्रम को क्रियान्वित किया है जिसमें कलात्मक रूपों को लिया गया है जिसमें किसी विधा या किसी क्षेत्र को अछूता नहीं रहने दिया गया है- उनमें से प्रत्येक के पास चाबी है जिससे रचनात्मक अनुभव के समग्र क्षेत्र को खोला जा सकता है।

इस अधयाय में निर्धारित स्थापित उपागम को जारी रखते हुए, आईजीएनसीए 11 वीं योजना के दौरान व्यक्ति के विखंडन के स्थान पर एकीकरण पर ध्यान संकेन्द्रित करेगा और अपनी कला और जीवन के सार्विक भविष्य-निरूपण में व्यक्ति की संस्थागत, व्यावसायिक और सामाजिक भूमिकाओं का सामंजस्य स्थापित करेगा। कलाओं के मुख्य स्रोत के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सब कार्यकलाप इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि कलाओं पर मुख्य स्रोत सूचना की पहचान सर्वेक्षण, सूचीनिर्माण, भण्डारण, पुनः प्राप्ति, विश्लेषण, अनुसंधान, प्रकाशन और प्रसार किया जा सके। इसकी सम्पत्ति में एक श्रव्य दृश्य और

लिपिबद्ध सामग्री का एक बड़ा अभिलेखागार है जो अमूर्त धरोहर के बहुत से विश्व धरोहर प्रेलेखों के लिए संकेत प्रस्तुत करता है। यह वेदों की दार्शनिक, परम्परागत और व्यावहारिक विधाओं का अध्ययन और अन्य पाठ विषयक परम्पराओं, मेल मिलाप और मैत्री भाव की विभिन्न परम्पराओं और समुदाओं की संस्कृति पर आधारित जीवन सहायक नीतियों का अध्ययन करेगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संग्रहण हमारी परम्परा के भीतर पूरी न की गई और न खोजी गई शुरूआतों और यात्राओं के व्यापक वर्धमान स्रोतों को द्योतित करते हैं। स्पृश्य और अस्पृश्य धरोहर के बीच सेतु बनाने का अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्रका सुझाव है कि नैसर्गिक पर्यावरणीय जीवन चक्रों और मानव सामाजिक कार्यों के संदर्भ में वर्तमान प्रलेखन में जातिगत और लोक कला परम्पराओं के बड़े संग्रहों को जोड़ा जाए। अतः इसका सुझाव है कि अपने प्रलेखन की परियोजनाओं को जारी रखा जाए जो सूचना के मात्र संगहण के उद्देश्य से आगे बढ़ती है और जड़ों पर परम्पराओं की जीवित बनाए रखने और जीवन बढ़ाने वाली विधाओं के पुनः पूर्ति और पुनर्जीवित करने के उद्देश्यों को अपनाया जाए। वर्तमान संदर्भों में परम्पराओं के पुनः एकत्र करने और विचार और क्रिया के रूप में पुर्नावर्तन और अनुनाद के साझे क्षेत्र का निर्माण किया जाए, जिसे पड़ोस में और विश्व भर में विभिन्न समुदायों, क्षेत्रों सामाजिक स्तरों पर और देशों द्वारा सहभाजित किया जाएगा और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कार्यक्रमों के माध्यम से इस पर बल दिया जाएगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का मिशन होगा कि भू उपग्रह पर मनुष्य और अन्य जातियों के उत्तर जीवन और उद्धार के लिए भारतीय संस्कृति की अस्पृश्य धरोहर की प्रासंगिकता को स्थापित किया जाए। यह प्रयास होगा कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के घोषणा विलेख को पूरा किया जाए जो विगत काल को साथ वहन करने की बात करता है, किसी बोझ के रूप में नहीं बल्कि वर्तमान संदर्भ में इस धरोहर के जीवन को बढ़ाने वाले तत्वों के पुर्नावर्तन के और एक जीवित धरोहर के रूप में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जीवन, शैलियों, मिथकों, वार्षिक चक्रों, परिस्थिति विज्ञान, मानव और प्राकृतिक वातावरण और परम्परागत हुनरों और ज्ञान प्रणालियों के संदर्भ में एक समेकित अन्तः शास्त्रीय उपागम के माध्यम से कलाओं के योजनाबद्ध वैज्ञानिक अध्ययन के प्रति अपने आपको समर्पित करना चाहता है।

नई योजनाएं

11वीं योजना अवधि के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की योजनाओं में अल्पावधि और दीर्घावधि दोनों कार्यक्रमों को शामिल किया गया है जो चार शैक्षणिक प्रभागों के कार्यों को एकीकृत करेगा और साथ ही अपने विशिष्ट कार्यों और उपागम को भी बनाए रखेंगे। कलाओं के मुख्य स्रोत केन्द्र के रूप में काम करने के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कलाओं के बारे में आरंभिक स्रोत सूचना की पहचान, सूचीबद्धता, सर्वेक्षण, भण्डारण, पुन:प्राप्ति, विश्लेषण, अनुसंधान, प्रकाशन और प्रसार करता रहेगा।

11वीं योजना के दौरान निम्निलिखित नई परियोजनाओं को क्रियान्वित किया जाएगा:

1. बहुविज्ञानीय अनुसन्धान को बढ़ावा देना और विभिन्न कलाओं के बीच महत्वपूर्ण संवाद।
2. कलाओं में पहचान के बहु स्तर और उनकी अभिव्यक्ति
3. भाषा और सांस्कृतिक विभिन्नता
4. विवेक परम्परा, परिस्थिति-विज्ञान, संसाधन प्रबन्धन और धारणीय विकास, धार्मिक पहचानें, परम्पराओं और मिश्र संस्कृतियों का संगम, अन्त: सांस्कृतिक संवाद।

नारीवाद: भारतीय कला और संस्कृति में महिलाओं का योगदान

1. संवर्धन और आधुनिकीकरण का स्रोत
2. सांस्कृतिक मानचित्र कला
3. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में कार्यालय साधनों का आधुनिकीकरण
4. ज्ञान बढ़ाने के लिए फेलोशिप

आधुनिकीकरण

11वी योजना के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, सीडीआरओएम, डीवीडी, टेप्स, फोटोग्राफ, स्लाइडों, फिल्म वीडियो आदि विभिन्न मीडिया में स्रोत सामग्रियों के पुर्नोत्पादन को बढ़ाएगा।

देश के सांस्कृतिक स्रोतों के अंककरण में अग्र स्थिति बनाए रखने और सुरक्षण, भण्डारण, सूचना की पुन: प्राप्ति, सामग्रियों और आर्टीफैक्ट, फिल्मों, फोटोग्राफों, टेपों आदि के लिए अपने उपभोक्ताओं को नवीनतम उपस्कर प्रदान करने के लिए यह प्रौद्योगिकी का अन्नयन करेगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने नए भवन कलानिधि और कलाकोश सहभाजित स्रोत भवन 'क' को चालू कर दिया है जहां शैक्षणिक संभाग जैसा कि कलानिधि , कलाकोश,, जनपद सम्पदा, सांस्कृतिक सायंत्रिक संचार और राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन स्थित है। आरपी रोड नं. 5 भवन में साथ ही साथ गैस्ट रूम, केफेटेरिया, रसोईघर, सेवा पेंट्रीज, स्टाफ केन्टीन और कांफ्रेंस कक्षों की सुविधा उपलब्ध करा दी गई है लेकिन उन्हें अभी तक चालू नहीं किया गया। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा काम पूरा कर देने के बाद इन्हें चालू कर दिया जाएगा।

इस भवन का कुल निर्मित क्षेत्र लगभग 27500 वर्ग मीटर है। भवन के डिजाइन और ढांचे के अनुरूप कार्यालय को फर्नीचर और उपस्कर से सज्जित करने के लिए, यह सुझाव है कि वर्क स्टेशन स्थापित किए जाएं, सूचना प्रोद्योगिकी यंत्र और संयन्त्र उपलब्ध कराए जाएं और कार्यालय स्वचलन उपस्करों की खरीद की जाए।

1 अप्रैल 2007 से 31 मार्च 2008 तक की अवधि के लिए वार्षिक रिपोर्ट

सारांश

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस वर्ष जीवन शैली अध्ययन, केन्द्रीय एशियाई अध्ययन, पूर्वोत्तर भारत, अन्त: सांस्कृतिक संवाद और प्रसार के क्षेत्रें में कई बड़े समारोहों का आयोजन किया। लोक ओर जनजाति संस्कृतियों की ओर विशेष ध्यान दिया गया।

केन्द्र ने मीडिया यूनिट, सांस्कृतिक सांयन्त्रिक प्रयोगशाला और कलानिधि पुस्तकालय अन्नयन के लिए कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जो संभागों के कार्य संचालन में वृद्धि करेंगे।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अब वैदिक श्लोकों, देश भर से वैदिक मन्त्रेच्चारण के विभिन्न स्कूलों के प्रलेखनों और राम कथा की विभिन्न क्षेत्रीय परम्पराओं के सब से बड़े गोदामों में से एक है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र प्रलेखन के आधार पर यूनेस्कों ने वेदों और राम कथा की मौखिक परम्पराओं को विश्व धरोहर की सर्वोत्तम कृतियां घोषित किया।

पूर्वोतर भारत ने जनजातीय समुदायों से जेवरों, वस्त्रों, वेशभूषाओं, वाद्ययन्त्रों और शस्त्रों सहित 1000 से अधिक जातिगत वस्तुएं प्राप्त की गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वानों ने इस क्षेत्र में विभिन्न संस्थानों में व्यापक क्षेत्र अध्ययन किए हैं और नेटवर्क स्थापित किया है ताकि फ़ोकस को तीव्र बनाया जाए।

शैल कला मे क्षेत्र कार्य से प्रलेखन और परिरक्षण के लिए भारी मात्रा में समाग्री प्राप्त हुई। शैल कला जनपद संपदा मंडल के आदि के श्रव्य कार्यक्रम के अन्तर्गत आता है।

'धार्मिक पहचाने और परम्परा के संगम' विषय पर गत वर्ष आरंभ किए गए संवाद के क्रम में, केन्द्र ने इस्लाम में भक्ति के रंगों पर दूसरे विषय पर विचार किया। 'हिन्द इस्लामी तहजीब के रंग-अकीदत के संग' विषय पर विचार गोष्ठियों, सार्वजनिक भाषणों, मंचनों और पूरक प्रदर्शिनियों का आयोजन किया गया।

'अनहदनाद' कार्यक्रम का आयोजन पंजाबी अकादमी के सहयोग से किया गया। यह तीन दिन का उत्सव था जिसमें पंजाब की जीवन शैली, संगीत, नृत्य, खानपान और संस्कृति को दर्शाया गया। इस कार्यक्रम की ओर बड़ी संख्या में श्रोतागण और दर्शकगण आकृष्ट हुए।

केन्द्र द्वारा 'वैदिक धरोहर' सप्ताह का आयोजन विशिष्ट रूप से किया जिसमें देशभर से 50 से अधिक वैदिक विद्वानों ने भाग लिया जिनमें से कुछ की आयु तो 90 वर्ष से भी अधिक थी और शायद ये विद्वान ही अपनी परम्पराओं के जीवित बचे हुए हैं। 'मित्र भाव' के लिए एक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें निर्धारित धर्मविधियों का कड़ाई से पालन किया गया।

पूर्वी एशियाई कार्यक्रम के अन्तर्गत दो मुख्य विषयों को लिया गया। पहला विषय था 'महान सिल्क रोड पर नगर, सड़कों और कारवां सरायों - युगों के माधयम से संयोजनों का एक प्रतीक (भारत, पश्चिम और मध्य एशिया)' जिसमें क्षेत्र में सांस्कृतिक संयोजनों और परस्पर प्रभावों की छान-बीन की गई। दूसरा, विश्वभर में संस्थानों में मध्य एशियाई सग्रहों का इतिहास, जो क्षेत्र में कार्यरत विद्वानों और संस्थाओं के बीच नेटवर्क स्थापित करने के लिए सेमिनार के अनुक्रम में तीसरा था।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास दुलर्भ पुस्तकों का भारी संग्रह है। इस बार भारत में दुलर्भ पुस्तकों से लिए गए चित्रों और फोटोग्राफों की दो प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया जिससे प्राचीन भारत की एक झलक और कश्मीर का सुस्पष्ट चित्र प्राप्त हुआ।

नारीवाद: लिंग संस्कृति और संस्कृति नेटवर्क ने मधुबनी कला पर कार्यशालाओं का आयोजन किया और कई प्रकाशन प्रदर्शित किए।

केन्द्र के कार्यकलापों की एक विस्तृत और प्रभागवार रिर्पोट निम्नानुसार है:

कलानिधि

कलानिधि एक राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डाटा बैंक के मुख्य घटक हैं- मुद्रित संग्रहों का एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय, माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिश का विशाल संग्रह स्लाइडों का एक ठोस संग्रह, सांस्कृतिक अभिलेखागार एवं भारत दक्षिण एशिया एवं पश्चिम एशिया के पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य, भाषा एक सुसज्जित श्रव्य/दृश्य एवं फोटो प्रलेखन/कलानिधि का मूल उद्देश्य अर्न्तविभागों जैसे कलाकोश एवं जनपद सम्पदा में सतत् शोध कार्यों के लिए प्रमुख सूचना/ज्ञान के स्रोत केन्द्र के रूप में सहायता प्रदान करना तथा सांस्कृतिक सूचनात्मक प्रयोगशाला एवं कलादर्शन के तकनीकी सूचना सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करना एवं साथ-साथ भारत तथा विदेशों में सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानाओं के शोध कर्ताओं को सहायता प्रदान करना है। कलानिधि के संग्रह, देशी तथा विदेशी अनेक भाषाओं में है। इसमें स्रोत वस्तुओं की संख्या, मुद्रित एवं मुद्रित, 2.4 लाख से अधिक है।

कार्यक्रम

संदर्भ पुस्तकालय

कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय में मानविकी और कलाओं के व्यापक क्षेत्रों में एक बड़ा संग्रह है। इसमें पुस्तकें, पत्रिकाएं, अप्रकाशित संस्कृत के कई पन्नों के रीप्रोग्राफिक्स, पाली, फारसी, और अरबी पांडुलिपियों में माइक्रो फिल्म और माइक्रो फिश, फोटोग्राफ और पुरातत्व, दर्शन, धार्मिक और परम्परागत अध्ययन, इतिहास और मानवशास्त्र, कला और साहित्य और लोक, ग्रामीण और समुदाय अध्ययन है। अप्रैल 2007 के बाद क्रय संग्रह में 5571 पुस्तकों की वृद्धि की गई और सामान्य उपहार संग्रह में 267 पुस्तकें प्राप्त हुई और डा कपिला वात्स्सायन से 6216 पुस्तकें उपहार के रूप में प्राप्त हुई। अब विदेशी भाषाओं सहित 12 भाषाओं में इसका संग्रह 1.39 लाख पुस्तकों पर आधारित है। नौ सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के व्यक्तिगत संग्रह भी इसमें रखे गए हैं।

"इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र संग्रह में संसाधन वृद्धि", "संग्रह सेवाओं का अन्नयन और आधुनिकीकरण" और "सांस्कृतिक आलेखगार और सेवाओं को पुष्ट करना" योजना के अन्तर्गत सरकार से अनुदान प्राप्त होने पर कलानिधि संभाग ने अर्जन, क्रय और उपहारों के रूप में संग्रहों में अत्यधिक वृद्धि की और प्रौद्योगिकी यन्त्रों में परिवर्तनों के साथ कदम रखने के लिए समस्त पुस्तकालय प्रबन्ध तन्त्र का आधुनिकीकरण किया।

मुद्रित सामग्री

अर्जन

इस वर्ष के दौरान विकसित किए गए कुछ विशेष संग्रह निम्नानुसार हैं:-

1. दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के प्रकाशन इंडोनेशिया, थाईलैंड, कम्बोडिया, लाओस, वीयतनाम, म्यानमार देशों पर पुरातत्व, मानवशास्त्र, लोकसाहित्य, इतिहास, दर्शन और कलाओं जैसे विषयों पर लगभग 650 पुस्तकें।

2. भारतीय प्रसार: भारतीय प्रसार और सम्बन्धित विषयों के बारे में लगभग 500 प्रकाशन

3. सांस्कृतिक संस्थानों के प्रकाशन

   निम्नलिखित सांस्कृतिक संस्थानों से लगभग 2200 पुस्तकें खरीद गई जो संदर्भ पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं थीं।

   क. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

   ख. ललित कला अकादमी, नई दिल्ली

   ग. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

   घ. एशियाटिक सोसाइटी, मुम्बई

   ड. आईसीसीआर, नई दिल्ली

   च. भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली

   छ. नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

   ज. भाषा अनुसंधान और प्रकाशन केन्द्र, बड़ोदरा

   ञ. भाषा अनुसंधान केन्द्र, इलाहाबाद

   ट. आईएसटीएसीएच, नई दिल्ली

   ठ. पुरातत्व और संग्रहालय, मध्य प्रदेश।

4. मुख्य भारतीय विद्या प्रकाशकों के प्रकाशन

   निम्नलिखित प्रकाशकों से 1500 महत्वपूर्ण पुस्तकें अर्जित की गई:

   क. मैसर्स मोती लाल बनारसी दास प्रकाशक (प्र.)लि., नई दिल्ली

   ख. मैसर्स आरियन बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली

   ग. मैसर्स मैपिन पब्लिशिंग प्रा.लि. अहमदाबाद

घ. न्यू एज इन्टरनेशनल (प्रा.) लि. नई दिल्ली

ड. मैसर्स ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, नई दिल्ली

च. मैसर्स डी.के.प्रिन्ट वर्ड (प्र.)लि., नई दिल्ली

छ. मैसर्स मनोहर पब्लिशर्स प्रा.लि. नई दिल्ली।

दुर्लभ पुस्तकें:

ज्योतिष, पुरातत्व, धर्म, संस्कृत, भाषा और साहित्य, शब्दकोश और दर्शन आदि विषयों पर 780 पुस्तकें खरीदने से केन्द्र की दुर्लभ पुस्तकों के संग्रह में वृद्धि की गई। दुर्लभ पुस्तकों के संग्रहों से लिए गए पुनर्मुद्रणों और फोटोग्राफ की दो बार प्रदर्शनी लगाई गई।

व्यक्तिगत संग्रह

यह पुस्तकालय विद्वानों के व्यक्तिगत संग्रहों द्वारा समृद्ध हुआ है:

सामान्य उपहार संग्रह	19289 पुस्तकें
सुनीति कुमार चटर्जी संग्रह	17265 पुस्तकें
हजारी प्रसाद द्विवेदी संग्रह	10244 पुस्तकें
देव मुरारका संग्रह	5323 पुस्तकें
महेश्वर नियोग संग्रह	2810 पुस्तकें
रामशरण त्रिपाठी संग्रह	2023 पुस्तकें
नारायण मैनन संग्रह	1850 पुस्तकें
ठाकुर जयदेव सिंह संग्रह	1138 पुस्तकें
कृष्णा कृपलानी संग्रह	858 पुस्तकें
विनोद सेना संग्रह	573 पुस्तकें
डा. कपिला वात्स्यायन संग्रह	6216 पुस्तकें (चल रही है)
कल्चर पीस संग्रह	64 पुस्तकें
अश्विन मेहता संग्रह	20 पुस्तकें

(हीरा माणिक संग्रह को सामान्य उपहार संग्रह में शामिल किया गया है लांस डेन संग्रह क्रय संग्रह में शामिल है)

पुस्तकालय अपना ध्यान इस बात पर संक्रेन्दित कर रहा है कि विश्व के सब भागों में प्रकाशित भारतीय और एशियाई मूल की हस्त लिपियों की सूची पर मुद्रित सामग्री के पूर्ण संग्रह का निर्माण किया जाए। इस वर्ष में 7315 पुस्तकों का सूची पत्र तैयार किया गया है और लिबसिस डेटाबेस में प्रविष्टियां की गई थी। इससे 100 नए सदस्य बनाए गए।

पत्रिकाएं:

यह पुस्तकालय 214 अनुसन्धान और तकनीकी पत्रिकाएं खरीदता है। मानव शास्त्र, पुरातत्व, कला, ग्रन्थ विज्ञान पुस्तक समीक्षा कम्प्यूटर और सूचना विज्ञान, संरक्षण, अभिनय कलाएं, लोक साहित्य, इतिहास, मानविकी, भाषाविज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, मुद्राशास्त्र, प्राच्य अध्ययन, दर्शन शास्त्र कठपुतली कला, धर्म, सामाजिक विज्ञान, थेयटर और क्षेत्र अध्ययन आदि विषयों को शामिल किया गया है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अभिदत्त पत्रिकाओं के 7400 पुराने प्रकाशनों की प्रविष्टियां ऑनलाइन डेटाबेस पर की गई थी। पुस्तकालय के पत्रिका अनुभाग को पुष्ट करने के लिए कला और पुरातत्व के क्षेत्र में लगभग 127 अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के पिछले संस्करणों को योजना अनुदान की सहायता से प्राप्त किया गया। संदर्भ पुस्तकालय में उपलब्ध लगभग 12000 सजिल्द पुस्तकों के डेटा एन्ट्री कार्य को पूरा किया गया।

इस पुस्तकालय का प्रस्ताव है कि विशेषतः दक्षिण, दक्षिण पूर्व और पश्चिम एशिया के लिए क्षेत्र संग्रहों को विकसित किया जाए और विकास के अगले चरण में इसके दायरे को धीरे-धीरे लेटिन अमेरिका और अफ्रीका तक विकसित किया जाए।

ग्रन्थ सूचियां

एबीआईए परियोजना

एबीआईए भारतीय पुरातत्व की टीकाकृत ग्रन्थ सूची है। जिसे वर्ष 1926-73 के दौरान केन इंस्टीट्यूट, लीडन द्वारा प्रकाशित किया गया था। जब इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट एशियन स्टडीज (आईआईएएस) लीडन ने इस ग्रन्थसूची को बनाने का प्रस्ताव दिया तो वर्ष 1996 में इसका आरंभ किया गया। नए रूपांतरण को एबीआईए साउथ और साउथ ईस्ट एशियन आर्ट और पुरातत्व इन्डेक्स (आईबीआईए इन्डेक्स) कहते हैं। आईआईएएस लीडन ने इस अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना को आरंभ किया ताकि ग्रन्थ सूचनी इलैक्ट्रानिक ऑनलाइन डेटाबेस को संकलित किया जाए और रखा जाए जो अंककृत रिकार्ड सप्लाई करता है जिस के अन्तर्गत ये विषय आते हैं: इतिहास पूर्व और पश्च, सामग्री कल्चर, परालेखशास्त्र ओर परालिपि,

मुद्राशास्त्र और मोहरविद्या। इस डेटाबेस से प्राप्त की गई टीकाकृत ग्रन्थसूची एबीआईए इन्डेक्स के सीडीआरओएम रूपांतरण के अलावा मुद्रित रूप में हर वर्ष प्रकाशित की जाती है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अगले पांच वर्ष के लिए यानी जनवरी 2007 से दिसम्बर 2011 तक कन्टरी कार्यालय से तालमेल कर रहा है। इस परियोजना के अन्तर्गत, इस वर्ष 126 सम्पादित अभिलेख लीडन कार्यालय को भेजे गए, 84 नए अभिलेख एबीआईए डेटाबेस में तैयार किए गए और विद्वानों ने 270 टीकाकृत अभिलेख तैयार किए। एबीआईए लीडन कार्यालय से एक दो-सदस्यीय विशेषज्ञ टीम जनवरी 2008 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आई ताकि कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाए और उनका मार्गदर्शन किया जाए कि वे एलएएन/डब्ल्यूएएन पर डेटा सूची बनाने और नेटवर्किंग के साफ्टवेयर का प्रयोग कर सकें।

गैर-मुद्रित सामग्री

अर्जन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और जादवपुर विश्वविद्यालय में 2007-2008 में सहयोग स्थापित किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत पुस्तकालय ने दुर्लभ बंगला साहित्य और हस्तलिपियों पर 10,000 डिजीटल बिम्ब और कुछ वीडियों प्राप्त किए। इस सहयोग को अगले वर्ष में भी जारी रखने का प्रस्ताव है।

प्रतिलिपि करण

हस्तलिपि पुस्तकालय

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश/डिजिटल संग्रह के रूप में एक हस्तलिपि पुस्तकालय का विकास किया है ताकि विभिन्न विषयों पर अप्रकाशित भारतीय हस्तलिपियों को जो भारत में इधर-उधर टूटी फूटी या बिखरी पड़ी है और ऐसे विदेशी संग्रहों को जिन तक अनुसन्धान करने वाले विद्वानों की पहुंच नहीं हो पाती एकत्र करने के लंबी अवधि से चले आ रहे मिशन को पूरा किया जाए। इस समय, इस संग्रह में 2.5 लाख से अधिक हस्तलिपियां हैं जो लगभग 20,000 माइक्रोफिल्म रोलों में है, जिनमें से लगभग 50 प्रतिशत को अंककृत कर लिया गया है। माइक्रोफिल्मिंग यूनिट ने विभिन्न पुस्तकालयों से 531 रोल प्राप्त किए जो इस वर्ष 6563 हस्तलिपियां और 3,32,130 फोलियो हो जाते हैं। इस समय चल रहे कुछ माइक्रोफिल्मिंग परियोजनाएं निम्नानुसार हैं:-

क. गवर्नमेंन्ट ओरिएन्टल मेनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी और रिसर्च सेन्टर, चिन्नई

ख. राजस्थान ओरिएन्टल रिसर्च इस्टीट्यूट, अलवर

ग. ओरिएन्टल रिसर्च इंस्टिट्यूट, मैसूर

माईक्रोफिल्मिंग के लिए हस्तलिपियों का एक सर्वेक्षण असम और कोलकाता में किया गया। कुछ चुनिन्दा इस्टीट्यूटस के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करने के लिए बातचीत आरंभ की गई।

नई परियोजनाएं

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी हरिद्वार, उत्तरांचल के बीच हस्तलिपियों की माइक्रोफिल्मिंग के लिए समझौता ज्ञापन को अन्तिम रूप दिया गया।

माइक्रोफिल्म रोलों की अनुलिपि बनाना

लगभग 12000 माइक्रोफिल्म रोलों की अनुलिपि तैयार करने के लिए प्रस्ताव को अंन्तिम रूप दिया गया है और 92 लाख रुपये की लागत के कच्चे माल के प्रापण के लिए आर्डर दिए गए। अनुलिपिकरण का कार्य आरंभ कर दिया गया है और आशा है कि 2010 तक इसे पूरा कर लिया जाएगा। तब इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र सब संस्थानों को अनुलिपि रोल सप्लाई करने के योग्य हो जाएगा जहां माइक्रोफिल्मिंग की गई थी और अपने दक्षिण क्षेत्र केन्द्र बैंगलूर को भी भेजेगा।

माइक्रोफिल्मिंग उपस्कार का प्रापण

योजना अनुदानों की सहायता से माइक्रोफिल्मिंग यूनिट का दर्जा बढ़ाया गया है और निम्नलिखित उपस्कर प्राप्त करके उसे आधुनिकीकृत किया गया है

1.	माइक्रोफिल्म रीडर	(इनडस)	–	3
2.	माइक्रोफिल्म रीडर	माइक्रोबू	–	3
3.	माइक्रोफिल्म स्कैनर	कैनन-एमएस 800	–	1
4.	माइक्रोफिल्म प्रोसेसर	कोडक पोस्टर	–	2
5.	माइक्रोफिल्म इंस्पेक्टर	(सोलर)	–	2

लाइडें और फ़ोटोग्राफ

प्रलेखन अधिकारी के असम और अरूणाचल प्रदेश के संग्रहालयों और संस्थाओं का दौरा किया और 967 डिजिटल फोटोग्राफ लिए। निम्नलिखित संस्थानों का दौरा भी किया गया:

- स्टेट म्यूज़ियम, गुवाहाटी
- पुरातत्व संग्रहालय, अम्बारी, गुवाहाटी
- जिला संग्रहालय, तेजपुर, असम
- राज्य संग्रहालय, बोमडीला, अरूणाचल प्रदेश
- जिला संग्रहालय टवांग, अरूणाचल प्रदेश
- पुरातत्व संग्रहालय ईटीनगर, अरूणाचल प्रदेश
- विष्णुपुर में टेराकोटा मंदिर, पश्चिम बंगाल

प्रलेखन अधिकारी ने 15-21 जुलाई 2007 को कोलकाता में संग्रहालयों और सांस्कृतिक संस्थानों का दौरा किया और निम्नलिखित संस्थानों के डिजिटल फोटोग्राफ लिए:

- एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता
- बंगीय साहित्य परिषद्
- गुरूसाडे संग्रहालय

कम्प्यूटरीकृत लिबसिस डेटाबेस में 2600 स्लाइडों के सूचीपत्र कार्ड डाले गए। इस डेटा के अन्तर्गत भारतीय लघुचित्र, बर्मा की कला, होयसालास और ककाटियास की वास्तुकला, सुल्तान काल की वास्तुकला, रागमाला चित्र, गुफा वास्तुकला और थाईलैंड की वास्तुकला आते हैं।

दुर्लभ पुस्तकों से लिए गए 1484 दृश्यों की सूची तैयार की गई। फरवरी 2008 में आयोजित एक प्रदर्शनी में मूल दुलर्भ पुस्तकों के साथ-साथ संग्रह से चुने गए दृश्य भी प्रदर्शित किए गए।

स्लाइड यूनिट संग्रह में दक्षिण पूर्व एशिया पर 1013 दृश्य जोड़े गए।

गुरूसॉडे संग्रहालय, कोलकाता के फोटा प्रलेखन के लिए समझौता विज्ञापन पर 21 नवम्बर, 2007 को हस्ताक्षर किए गए।

संरक्षण प्रयोशाला

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास एक पूर्ण रूप से सज्जित संरक्षण प्रयोगशाला है जो न केवल केन्द्र के संग्रहों के संरक्षण एवं मरम्मत कार्य की जरूरतों को पूरा करता है बल्कि कला और संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत अन्य संस्थानों को भी सहायता प्रदान करता है। यह समस्त भारत में विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से जागरूकता अभियान और प्रशिक्षण

कार्यक्रम संचालित करता है। संरक्षण में निपुणता के लिए एक केन्द्र इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में बनाए जाने की योजना है। प्रयोगशाला में इस वर्ष निम्नलिखित कार्य किए गए:

- महावीर जैन पुस्तकालय से हस्तलिपियों का संरक्षण
- हरिकथा संग्रह का प्रलेखन और संरक्षण
- ''बंगाल में मुस्लिम वास्तुकला में टेराकोटा मीनाकारी'' पुस्तक की छोटी मोटी मरम्मत और धूम्रीकरण का काम पूरा किया गया।
- अनजुमन-ए-तवारीफ, उर्दू घर, केन्द्रीय पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय और ग़ालिब इस्टीट्यूट की हस्तलिपियों की हालत का मूल्यांकन करने के लिए आरम्भिक सर्वेक्षण किया गया।
- जून 2007 में उर्दू घर और जुलाई 2007 को हरदयाल म्यूनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी पर 'हस्तलिपियों की देखरेख और संरक्षण' पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया
- जुलाई 2007, में जनपद सम्पदा पर 143 मखौटों के प्रलेखन और संरक्षण का कार्य पूरा किया गया।
- अगस्त 2007 में हरदयाल म्यूनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी और सितम्बर 2007 में दरगाह खाने-खान गुलाम अली में 15-दिवसीय कार्यशालाओं का आयोगजन किया गया।
- प्रो. महेश्वर नियोग संग्रह की सांची हस्तलिपि का प्रलेखन और संरक्षण किया गया।
- अक्तूबर 2007 में टवाँग विहार में अक्टूबर 2007 में 'परम्परागत दस्तकारी का संरक्षण और परिरक्षण करने की घरेलू तकनीक का प्रलेखन' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- सितम्बर 2007 में सीआईएल की नौ भूर्ज पत्र हस्तलिपियों का संरक्षण
- कला दर्शन प्रभाग की काष्ठ मूर्तियों, कपड़ा पेंटिंगस, कुंडली चित्रों, और काष्ठ स्तम्भों का संरक्षण

निष्पादित किए गए अन्य कार्यकलाप

रैट्रो बदलाव परियोजना

वर्ष 2007-2008 के दौरान रैट्रो बदलाव के माध्यम से संदर्भ पुस्तकालय की पुस्तक सूची को अद्यतन बनाने की प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया गया। एक लाख रिकार्ड सम्पादित

करने और मार्क-21 अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक सूची फार्म में लगभग 50000 नए अभिलेखों के सृजन के लिए बाहरी एजेंसियों को काम सौंप दिया गया है।

कलानिधि संभाग में प्रौद्योगिकी संसाधनों का उन्नयन

लिबसिस साफ़्टवेयर का लिबसिस 4.0 से एलएस प्रीमिया में उन्नयन कर दिया गया है

कलानिधि संभाग में अभिदत्त किए गए इलैक्ट्रानिक संसाधनः

वर्ष 2008 में कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय ने निम्नलिखित ऑनलाइन डेटाबेस अभिदत्त किए:

(क) एसपी प्लेटफार्म पर पूर्वलक्षी विलासन आर्ट इन्डेक्स

(ख) एसपीम्लेट फार्म पर लिसन आर्ट इंडेक्स (1984-2007)

(ग) विलसन आर्ट सार (1984-2007)

(घ) इबीएससीओ मानविकी अन्तर्राष्ट्रीय कम्प्यूटर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पर उच्चगति इन्टरनेट संयोजन

सांयन्त्रिक केन्द्र नई दिल्ली की सहायता से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 2 एम बी पी एस इन्टरनेट सम्बद्धता स्थापित की है। उपर्युक्त स्थापना के लिए पट्टे पर लाइन और अन्य आवश्यक हार्डवेयर पहले ही प्राप्त कर लिया गया है और अप्रैल 2009 में चालू किए जाने के लिए स्थापित कर दिया गया है।

साथ ही, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भीतर एल ए एन सुविधा उपलब्ध कराने के लिए नं. 5 आर पी रोड की सब मंजिलों और ब्लाकों में सम्बद्धता के लिए नेटवर्क केबल लगा दी गई हैं।

पुस्तकालय सूचना तन्त्र

सूचना तंत्रः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय में उपलब्ध सब पुस्तकों और पत्रिकाओं के बारे में पुस्तक-सूची उपभोक्ताओं की सूचना के लिए ऑनलाइन पहुंच आरंभ कर दी गई है।

कोटि-उन्नयन और आधुनिकीकरण

योजनां अनुदान के कारण कलानिधि संभाग में प्रौद्योगिकी उन्नयन किया गया है। पुस्तकालय स्वचालन साफ़्टवेयर को MARC 21 और यूनीकोड के नए समर्थनकारी रूपांतरण

के लिए उन्नत किया गया। उपर्युक्त साफ़्टवेयर कोटि-उन्नयन के लिए आवश्यक हार्डवेयर प्राप्त कर लिया गया है। दुर्लभ पुस्तकों के 4 लाख पृष्ठों का अंककरण आरंभ कर दिया गया है। इन्टरनेट पर काम आरंभ कर दिया गया है।

माइक्रोफ़िल्म यूनिट में सुधार किया गया है। माइक्रोफिल्मिंग कार्य के लिए सब आवश्यक उपस्कर प्राप्त कर लिए गए थे। कई इलैक्ट्रानिक पूर्ण टेक्सट और पृथककारी और इंडेक्सिंग डेटाबेस जैसा कि मानविकी अन्तर्राष्ट्रीय पूर्ण विलसन आर्ट इंडेक्स संदर्भ पुस्तकालय संग्रह में उपलब्ध करा दिए गए हैं। संरक्षण प्रयोगशाला के लिए एक नई प्रयोगशाला स्थापित करने का कार्य आरंभ कर दिया गया है। कुछ संरक्षण यन्त्र प्राप्त कर लिए गए हैं और कुछ अगले वित्त वर्ष में प्राप्त किए जाएंगे। आनॅ लाइन पर सब सूचियां तैयार करने के लिए रिकार्डो को पूरा करने और अद्यतन बनाने का काम बाहरी एजेन्सी को सौप दिया गया है। माइक्रोफिल्म रोलों के अनुलिपिकरण का कार्य आरंभ कर दिया गया है। बहुत से कलानिधि कर्मचारियों को कार्यालय में और बाहर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भेजा गया था ताकि वे प्रवीणता प्राप्त कर सकें और ज्ञान को अद्यतन बना सके। कलानिधि कर्मचारियों और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अन्य संयागों में कर्मचारियों के लिए कार्यालय के भीतर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। लगभग 120 विदेशी पत्रिकाओं की पुरानी प्रतियां प्राप्त करने के लिए एक बडा कार्यक्रम हाथ में लिया गया है। पत्रिकाओ की लगभग 12000 सजिल्द प्रतियां संदर्भ पुस्तकालय में प्राप्त हुई थी और उन्हें ऑनलाइन डेटाबेस में दर्ज कर दिया गया है।

कार्यक्रम

सांस्कृतिक अभिलेखागार

विभिन्न विधाओं से सम्बद्ध सामग्री-साहित्य और व्यक्तिगत इतिहास, उच्चारण, चित्रकारी, संगीत, लोक साहित्य और कबीलों की कलाओं-मूल रूप में और अभिदत्त प्रतियों में और विद्वानों, कलाकारों और पारखियों द्वारा चुनी गई कृतियों को वर्गीकृत किया गया है और सांस्कृतिक अभिलेखागारों में उनकी सूचियां तैयार की गई हैं। सांस्कृतिक अदलाबली कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्तिगत संग्रहों द्वारा अभिलेखागार समृद्ध हो गए है।

वर्ष 2007-2008 के दौरान निम्नलिखित कार्यकलापों को हाथ में लिया गया :

चित्रकारी का इलेजबेथ-ब्रूनर संग्रहः 350 चित्र प्राप्त किए गए और उनके इन्डेक्स कार्ड तैयार किए गए। शेष 490 चित्र अगले वर्ष प्राप्त किए जाएंगे।

केरल के परम्परागत नृत्य पर बालान नम्बीयार का स्लाइडों का संग्रहः 1550 स्लाइडों के इंडेक्स कार्ड तैयार किए गए ।

लेखागार समाग्री का नया अर्जन

शम्भूनाथ मिश्र से 1457 फोटोग्राफ नेगेटिवों सहित, इन्डेक्स कार्डों, एलबमों और गर्ज़टीयरों, पश्चिम बंगाल के 121 ताराकोटा मंदिरों के फोटो प्रलेखन के साथ, इन्डेक्स शीटें और जिला नक्शें प्राप्त किए गए।

श्री अश्विन मेहता द्वारा दान में दिए गए श्री अश्विन मेहता के फोटाग्राफ संग्रह को अंकीकृत करके सीडी में स्टोर कर दिया गया है।

डा0 कपिला वात्सायन के फ़ोटोग्राफों, संगीत रिकार्डों, पत्राचार के संग्रह को सूचीबद्ध किया गया है इसे डॉ वात्सायन से प्राप्त किया गया है

दृश्य सामग्रियां का अंककरण

अभिलेखगारों में निम्नलिखित संग्रहों का अंककरण कर दिया गया है।

- सुनील जनाह संग्रह
- राबड़ी फोटोग्राफ
- मार्थास्ट्रान संग्रह
- डा यशोधर मथपाल द्वारा भीमटेका, उत्तराखण्ड झीरी और केरल का रॉक ऑर्ट स्केल पुनः प्रात्रतीकरण
- आनन्द कुमार स्वामी का फोटोग्राफों का संग्रह
- ज्योति भट्ट और राघव कनेरिया फोटोग्राफ
- हेनरी कार्टीयर ब्रेसन फोटोग्राफ संग्रह
- डेविड उलरिच फोटो संग्रह

प्रलेखन

श्रव्य-दृश्य (मीडिया यूनिट)

आरंभ से ही इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र समुदायों की जीवन शैलियों और रस्मों को लिपिबद्ध करना और महान विभूतियों से साक्षात्कार करना आया है। श्रव्य-दृश्य यूनिट के पास अच्छी तरह से सूचीबद्ध पुस्तकालय है जो भीतरी और बाहरी उपभोक्ताओं के लिए सुगम्य है।

इस वर्ष जो मुख्य प्रलेखन कार्य किया गया उसमें से कुछ का संबंध विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त रामकथाओं, आठ देशों से प्राप्त बौद्ध मत मन्त्रों और वैदिक धरोहर परियोजना के अन्तर्गत प्रलेखन से संबंधित है। इस वर्ष के दौरान किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नानुसार हैं:

मीडिया यूनिट ने अपने प्रलेखन विचारों पर 25 डीवीडी जारी किए।

निम्नलिखित का प्रलेखन किया गया:

1. धरोहर मठ महाबोद्धी सोसाइटी
2. धरोहर ग्राम रैथल-उत्तराखण्ड में
3. वाराणसी के घाटों पर धर्मतत्वज्ञ समारोह
4. त्रिपुरा में रीगंस और अन्य क़बीले
5. दुमका के पहाड़िया कबीले
6. जालन्धर में हरि वल्लभ संगीत सम्मेलन

उन्नयन

इस कार्यालय में श्रव्य-दृश्य प्रलेखन को हाथ में लेने के लिए एक बहु-कैमरा स्टूडियो का निर्माण किया जा रहा है। स्टूडियो में आधुनिक डिजिटल कैमरा चेन लगाई जाएगी तथा विद्वानों और अनुबोधकों को अनुबोधन करने के लिए स्विच, बहु चैनल, श्रव्य कन्सोल और एक कम्प्यूटरीकृत स्वचालित मशीन के माध्यम नियंत्रित किया जा सकता है।

नवीनतम डिजिटल क्षेत्रीय कैमरे, श्रव्य तन्त्र, प्लास्मा स्क्रीन आदि को खरीदा गया है ताकि कार्यालय में ही प्रलेखन और प्रसार प्रक्रिया को पुष्ट किया जा सके।

एक श्रव्य-दृश्य पुस्तकालय का निर्माण किया जा रहा है ताकि आईजीएनसीए की श्रव्य-दृश्य सामग्री के बड़े संग्रह तक पहुंच प्राप्त हो सके। नियमित फिल्म शो के आयोजन के लिए एक नए प्रेक्षागृह का निर्माण किया जा रहा है। मीडिया यूनिट में दो सम्पादन कक्ष-रैखिक और अरैखिक बनाए जा रहे हैं। जबकि रैखिक कक्ष का प्रयोग आरेखी फुटमान के प्रक्रमण के लिए किया जाएगा, वहीं अरैखिक कक्ष का प्रयोग सम्पादन और अंककरण के वर्तमान कार्य के लिए किया जाएगा।

फ़ोटोग्राफ़ी

यह अनुभाग नियमित रूप से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभी कार्यक्रमों के फोटो प्रलेख तैयार करता है। ये फोटोग्राफ प्रैस प्रचार पत्रिका विहंगम के लिए उपलब्ध कराए जाते हैं, यह आईजीएनसीए न्यूजलैटर है।

अन्य कार्यकलाप

1. आईएफएलए के अध्यक्ष सहित यूरोपीय देशों से पुस्तकालय और सूचना पेशेवरों के एक प्रतिनिधि मंडल, ने 12 मार्च 2008 को इस पुस्तकालय का दौरा किया।

2. राज्य विश्वविद्यालय लाइब्रेरी नेटवर्क के अधीन थाईलैंड से विभिन्न विश्वविद्यालयों के अधिकारियों और पुस्तकालयाध्यक्षों (लायब्रेरियन) के एक 18 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने 24 मार्च, 2008 को कलानिधि का दौरा किया। प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने इस बात में बहुत रुचि दिखाई कि उनके कर्मचारियों को संभाल और संरक्षण का प्रशिक्षण इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से प्राप्त हो। वे एबीआइए परियोजना और आईजीएनसीए के अंककरण प्रोग्राम में भी दिलचस्पी दिखा रहे थे।

3. जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली के पुस्तकालय और सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों ने 11 दिसम्बर, 2007 से 8 जनवरी 2008 तक कलानिधि में व्यावहारिक पुस्तकालय प्रशिक्षण प्राप्त किया।

4. डॉ. रमेश सी0 गौड़, विभागध्यक्ष के एन ने निम्नलिखित विचारगोष्ठियों में भाग लिया और शोध लेख प्रस्तुत किए: भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूर, इंडियन इंस्टीट्यूट आफ़ एक्ट्रोफ़िजिक्स, बेंगलूरू और टाटा इंस्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च, बम्बई द्वारा आयोजित अपनी वैज्ञानिक धरोहर को सुरक्षित रखने पर राष्ट्रीय कार्यशाला; अक्टूबर 2007 में आईएसआई कोलकाता द्वारा आयोजित डिजिटल संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला; 26 सितम्बर 2007 को नेशनल म्यूज़ियम इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली द्वारा ''कापी राइट विषय और अंककरण परियोजनाएं'' और 'भारत में व्यापार पुरालेखों के संरक्षण और पुहंच के लिए आईसीटी का अनुप्रयोग' और 28 फरवरी, 2008 को भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व द्वारा आयोजित सम्मेलन में 'भारत में व्यापार पुरातत्व -उपदेश और भावी संभावनाओं' पर भाषण दिया।

कलानिधि प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन, कार्यशाला

(i) कलानिधि और जनपद सम्पदा ने भारत सोक गाकेई के सहयोग से 3 मई, 2007 को 'डाईसेकू आईकेड़ा, शांति की संस्कृति बनाते हुए' विषय पर शांति की संस्कृति पर डाईसॉकू आईकेड़ा कार्नर के तत्वावधान में एक-दिवसीय विचारगोष्ठी आयोजित की गई। डॉ लोकेश चन्द्र इस समारोह के समापति थे। इस विचार गोष्ठी के साथ कु0 सुषमा अग्रवाल द्वारा डा डाईसेकू आईकेड़ा को समर्पित 'शांति का प्रादुर्भाव' विषय पर चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

(ii) शांति की संस्कृति पर डाईसेकू आईकेड़ा कार्नर कलानिधि संदर्भ-पुस्तकालय के तत्वावधान में मात्र सोक गाकेई के सहयोग से "मानव संबंध को बहाल करना: वैश्विक शांति की ओर पहला कदम, शांति प्रस्ताव, 2007 डॉ डाईसेकू आईकेड़ा द्वारा" विषय पर एक विचार गोष्ठी का आईजीएनसीए में 20 सितम्बर, 2007 को आयोजन किया गया। विचारगोष्ठी भाग लेने वालों की संख्या 400 से अधिक थी।

(iii) 'धारणीयत विकास के लिए प्रकृति के साथ शांति' विषय पर एक-दिवसीय विचारगोष्ठी: चिरस्थायी मानव सुख के लिए नींव की स्थापना 1 30 जून, 2007 को कलानिधि प्रभाग पर भारत सोका गाकेई के सहयोग से शांति की संस्कृति पर डा डाईसेकू आईकेड़ा कार्नर के तत्वावधान में एन.सी.ई.आर.टी. अध्यापकों के लिए शांति शिक्षा पर एक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

(iv) कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय ने "परम्परागत भारतीय लोक कला का प्रयोग करते हुए एक दक्षिण भारतीय मौखिक महाकाव्य की संजीवता" विषय पर कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय द्वारा 23 नवम्बर, 2007 को 3:30 बजे केनेडियन फ़िल्म निर्माता और सोफिया हिलरन फाऊंडेशन, केनेडा के अध्यक्ष डॉ ब्रेन्डा बैक द्वारा वार्ता का आयोजन किया।

(v) 11-17 अक्तूबर, 2007 को जनपद सम्पदा प्रभाग के सहयोग से कलानिधि द्वारा टवांग (अरुणाचल प्रदेश) में परम्परागत दस्तकारियों का संरक्षण और परम्परागत संरक्षण तकनीकों के प्रलेखन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

(vi) स्लाइड यूनिट द्वारा 8 अगस्त, 2007 को 'सानडीगो कला संग्रहालय में एशियाई संग्रह', विषय पर डा0 सोन्या रीह क्विनटानिल्ला, सानडीगो कला संग्रहालय, यूएसए द्वारा एक लैक्चर का आयोजन किया गया।

(vii) कलानिधि प्रभाग ने 11 फरवरी, 2008 को अपना 19वां वार्षिक दिवस मनाया। इस अवसर पर "सांस्कृतिक ज्ञान संसाधनों का विपणन और उन्नति: कलानिधि सांस्कृतिक संसाधन केन्द्र के विशेष संदर्भ में" विषय पर एक पैनल विचार विमर्श का भी आयोजन किया गया। उस दिन "वास्तविक भारत की झलकियां" (इन्दिरागाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र-संदर्भ पुस्तकालय के दुलर्भ पुस्तक संग्रह से चित्र) पर एक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया। प्रदर्शनी का आयोजन 11 फरवरी से 23 फरवरी, 2008 तक हुआ। इस अवसर पर निजी संग्रह के लिए संरक्षण जागरुकता पर एक कार्यशाला का आयोजन कलानिधि संरक्षण यूनिट द्वारा किया गया।

कलानिधि प्रभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनियाँ

(viii) "संरक्षण अन्तरापृष्ठ: सामग्री और विधियाँ" पर एक प्रदर्शनी का आयोजन 4 दिसम्बर से 10 दिसम्बर, 2007 तक किया गया। प्रदर्शनी का उद्देश्य यह था कि परम्परागत सामग्रियों, तकनीकों और विधियों की एक सूची तैयार की जाएं जिनका प्रयोग सांस्कृतिक धरोहर की उत्पति और संरक्षण के लिए किया जाता है और उनके महत्व का पुन: पता लगाने के लिए जागरूकता और रजामन्दी लाई जाए। आईएनटीएसीएच द्वारा 4 दिसम्बर, 2007 को इसका आयोजन किया गया और नेशनल ट्रस्ट के अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने वाले 250 से अधिक प्रतिनिधियाँ ने इस प्रदर्शनी को देखा और इसके बारे में चर्चा की।

(ix) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पर समारोह के अवसर पर माटीघर में 11 से 13 जनवरी, 2008 के दौरान भारतीय प्रसार पर पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय द्वारा किया गया।

(x) हंगरी सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से ब्रूनर चित्रों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

(xi) 15 जनवरी, 2008 को चीनी, कला अकादमी से आए प्रतिनिधियों के लिए संदर्भ पुस्तकालय में कलानिधि संभाग द्वारा चीनी सामग्रियों के लिए एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

नेटवर्किंग

कोलकाता में हस्तलिपि संग्रहों का सर्वेक्षण

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की एक टीम ने 16 से 21 जुलाई, 2007 तक निम्नलिखित संस्थानों का दौरा किया। टीम के सदस्य ने डॉ रामेश सी गौड़, विभागाध्यक्ष (के एन), श्री पी. झा निदेशक सीआईएल, श्री डीएनवीएस सीता रमैया, फोटोग्राफी अधिकारी, श्री वी. बांगरू, प्रलेखन अधिकारी, श्रीइलियास अहमद संरक्षण सहायक और श्रीमती कोकली विश्वास, सूचना सहायक।

1. एशियाटिक सोसाइटी
2. रामकृष्ण मिशन सांस्कृतिक संस्थान
3. सामाजिक विज्ञान के अध्ययनों के लिए केन्द्र
4. बांगिया साहित्य परिषद्

5. संस्कृत साहित्य परिषद्
6. प्रसिडेंसी कॉलेज
7. संस्कृत कालेज
8. संस्कृत पुस्तकालय, कोलकाता विश्वविद्यालय
9. आशुतोष संग्रहालय, कोलकाता विश्वविद्यालय
10. भारतीय संग्रहालय
11. नेशनल लाइब्रेरी आफ़ इंडिया

विभिन्न संग्रहालयों और संस्थानों के दौरे के समय प्रलेखन अधिकारी द्वारा 500 डिजिटल फोटोग्राफ लिए गए। टीम ने ऐसे संग्रहों का जायजा लिया जिनका श्रव्य दृश्य मान और संरक्षण के लिए ऐतिहासिक रुचि, पुरालेखी सामग्री का अंककरण, हस्तलिपियाँ, फोटोग्राफ़ अद्वितीय थे और बौद्धिक उत्तेजना, असन्तोष, स्वतन्त्रता की लड़ाई और गत 200 वर्षों से अधिक समय में बंगाल और भारत में परिवर्तन का चित्रण कर सकते थे। पुस्तकालयों और वेबसाइटों के नेटवर्किंग के लिए संस्थानों और व्यक्तियों के साथ सहयोग के लिए टीम ने वार्तालाप आरंभ किया।

हस्तलिपि संग्रह का सर्वेक्षण, गुवाहाटी, असम

डा क. के. वर्मा (आर. ओ.) डा डी आर गुप्ता (जेआरओ) श्री बी एस राणा, लाइब्रेरी सहायक पर आधारित एक टीम ने हस्तलिपि संग्रहण का सत्यापन करने के लिए ऐतिहासिक और पुरातत्व विषयक अध्ययन विभाग, असम राज्य संग्रहालय कामसपाहारण सेती, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी का 5 से 8 दिसम्बर, 2007 तक दौरा किया। "वैश्विक सूचना के रूप में पुस्तकालय, पुस्तकालय संभावनाएं और पुस्तक सूचियां" विषय पर आई.एन.एफ.आई. जी.एन.ई.टी. केन्द्र द्वारा कार्यशाला का आयोजन गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी के सहयोग से किया और उपर्युक्त टीम ने उसमें भाग लिया।

कलानिधि प्रभाग ने मैक्स मूलर भवन, नई दिल्ली के सहयोग से निम्नलिखित प्रस्तुतीकरणों का 26-10-2007 को आयोजन किया- "विगत काल की रक्षा करना- जर्मन सांस्कृतिक ध रोहर के अंककरण की ओर"-द्वारा डा थोमस स्टैकर, हरज़ोग आगस्त लाइब्रेरी, वुलफेनबट्टल और "नेस्टर और कोपल-जर्मनी में डिजिटल दीर्घावधि संरक्षण के प्रति सहकारी उपागम" द्वारा डॉ थोमस वुलसचलाजेर, जर्मन नेशनल लाइब्रेरी फ्रेंकफर्ट। इस आयोजन में दिल्ली से 600 से अधिक पुस्तकालयाध्यक्षों ने भाग लिया।

सांस्कृतिक सायंत्रिक संचार

सायंत्रिक संचार का सृजन उपयोग, विकास और नये तकनीक के प्रदर्शन और सांस्कृतिक प्रलेखन को बढ़ाने के लिये कला और सूचना प्रौद्योगिकी अनुशासनों के बीच सहक्रियाओं की स्थापना हेतु किया गया। 2007-08 में कला एवं संस्कृति में प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के क्षेत्र में आईजीएनसीए के द्वारा किए गए कुछ अग्रणी कार्य निम्नांकित हैं।

भारतीय कला एवं संस्कृति पर राष्ट्रीय डेटाबैंक:

कार्यकलाप के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध सूचना और ज्ञान और इस तक लोगों की पंहुच बढ़ाने के अंकेक्षण, प्रलेखन और प्रसार हेतु संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राष्ट्रीय डिजिटल अंकेक्षण पुस्तकालय (लाइब्रेरी) के द्वारा वृहत प्रयास के स्तर पर एक मार्गदर्शी परियोजना (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली के सहयोग से) प्रारंभ किया है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य अंकीय तकनीक के प्रयोग के द्वारा भारतीय सांस्कृतिक संसाधनों तक पहुंच की बढ़ावा देना है। आईजीएनएसीए के परिप्रेक्ष्य में यह वर्तमान कलासंपदा परियोजना का विस्तार है। जहां एक विशाल मात्रा में सांस्कृतिक डेटा आईजीएनसीए के इंट्रानेट पर आनलाइन उपलब्ध कराया गया है। परियोजना में एकल खिड़की पर भारतीय कला के विभिन्न पहलुओं और संस्कृति से संबंधित सूचना का अंकीकरण सम्मिलित है। परियोजना के प्रदायों में एक लाख दृश्य (पुरातात्विक स्थलों, विरासत और देशज जीवन शैलियों के अंकीय फोटो, आडियों और वीडियो के एक हजार घंटे कला और संस्कृति पर दुर्लभ पुस्तकों के 50 लाख पन्ने, कुछ पुरातात्विक स्मारकों से गुजरने संबंधी सूचना समाहित किए हुए कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए वेबसाइट सम्मिलित हैं। भारतीय कला और संस्कृति के प्रलेखन, एकीकरणर और संरक्षण में कंप्यूटर तकनीक के प्रयोग को दिखाने वाले उपर्युक्त घटकों के निर्गत से चल मल्टीमीडिया प्रदर्शनी इस परियोजना में शामिल होगा। अब तक इस परियोजना के अंतर्गत एएसआई पुस्तकालय के 1700 से अधिक दुर्लभ पुस्तकों (लगभग सात लाख पेज) का अंकीकरण किया गया है, 30,000 अंकीय चित्रों और लगभग 90 घंटों का आडियो-वीडियो सामग्री इकट्ठा किया गया है। लोगों की पहुंच के लिए आंशिक डेटा आईजीएनसीए की वेबसाइट (www.ignca.gov.in) पर प्रकाशित किया गया है।

आईजीएनसीए ने 20000 माइक्रोफिल्म रोल्स, 1.5 लाख माइक्रोफिच और अंकीय प्ररूपों में संस्कृति, फारसी और अरबी में उपलब्ध 2.75 लाख पांडुलिपियों को अधिग्रहीत किया है। लगभग 2156 माइक्रोफिल्म रोल और 2136 माइक्रोफिश(एसबीपीके बर्लिन संग्रह) जिसमें क्रमशः लगभग 15.7 लाख और 91,715 फोलियो शामिल हैं, का अंकीकरण किया गया है।

पांडुलिपियों के अधिग्रहण को जारी रखते हुए श्रीनगर के ओरिएंटल रिसर्च लाइब्रेरी के 1200 से अधिक पांडुलिपियों को 2007 के दौरान अंकीकृत किया गया है। ओआरएल श्रीनगर में उपलब्ध पांडुलिपियों जिसमें संस्कृति (शारदा) और फारसी में योगवशिष्ठ, महाभारत, शैववाद, आयुर्वेद आदि पर दुर्लभ पांडुलिपियां शामिल हैं, के अंकीकरण को आईजीएनसीए ने पूरा कर लिया है।

आईजीएनसीए द्वारा शांतिनिकेतन में 2502 गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की दुर्लभ पांडुलिपि और फाइलों (लगभग 1.65 लाख) और इलाहाबाद संग्रहालय में 5200 पांडुलिपियों (3.0 लाख से अधिक पृष्ठों) को अंकीकृत किया गया है।

दो लाख पेजों से अधिक को समाहित किये हुये राष्ट्रीय संग्रहालय कलेक्शन के 6 सौ से अधिक पांडुलिपियों को 2007 में अंकीकृत किया गया। 18 सितंबर, 2007 तक कुल 2765 पांडुलिपियों को राष्ट्रीय संग्रहालय में अंकीकृत किया गया है।

इस कालक्रम के दौरान केंद्रीय एशियाई प्रदर्शनी के लिये आईजीएनसीए के दुर्लभ फोटोग्रैफिक और चित्रकला संग्रह मुख्य रूप से, शंभूनाथ साह (61), ज्याति भट्ट और राघव कनेरिया (50), डेविड उलरिच (25), मार्था स्ट्रॉन (33), अश्विन मेहता (25), ए.के. कुमारस्वामी (227) वर्ली चित्रकला (61), राबरी फोटाग्राफ (100) यशोदा मठपाल- रॉक कला (400) कोमला वर्धन (50) और 200 से अधिक फोटोग्रीफ अंकीकृत किए गए।

30,000 से ज्यादा स्लाइड्स और निगेटिव भी अंकीकृत किए गए। उनमें से कुछ हैं: प्रो. ए के दास संग्रह (800), ग्वालियर किला (791), उत्तरपूर्व के पुरातात्विक स्थल (990), राजस्थान रेगिस्तान पर श्रीनारंग के संग्रह (16,765 स्लाइड्स और 7000 निगेटिव फ्रेम्स), अरुणाचल प्रदेश पर केशव चंद्र (264) और रामकथा (1413) इत्यादि।

भारतीय पुरातत्व के अड़तालीस खंड- स्मारकों और पुरावशेष पर राष्ट्रीय मिशन के लिए एक समीक्षा को खोजने लायक मूलपाठ प्रारूप में परिवर्तित किया गया है।

समन्वायक, बृहदीश्वर परियोजना, डा. आर. नागास्वामी ने बृहदीश्वर मंदिर के शिल्प, स्थापत्य और पुरालेख को व्यवस्थित किया है।

आईजीएनसीए वेबसाइट भारतीय कला और संस्कृति पर सूचना का प्रमुख स्रोत है और 2007-08 के दौरान प्रतिमाह 18 लाख लोगों ने इस साइट को हिट किया। आईजीएनसीए ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के लिऐ (www.asi.nic.in) वेबसाइट डिजाइन और विकसित किया जिसकी उपयोगकर्ताओं और विद्वानों द्वारा व्यापक तौर पर प्रशंसा की गयी है। राष्ट्रीय

सांस्कृतिक कोष (संस्कृति मंत्रालय), राजेंद्र स्मृति संग्रहालय, पटना और राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली के लिए भी वेबसाइट तैयार किए गए।

संरचनात्मक उन्नयन और आधुनिकीकरण योजना के अंतर्गत योजना अनुदान से दो उपकरण ब्रिउकमान का 3डी अंकीकरण उपकरण और 50 टीबी नेट एप्स स्टोरेज खरीदे गए। तंजावुर के बृहदीश्वर मंदिर और नई दिल्ली का हूमायूं का मकबरा, जैसे स्थल और चुने हुए पुरातात्विक स्मारक के 3डी प्रारूप (मुख्य रूप से वॉक थ्रू) को निर्मित करने में यह सीआईएल क्षमता को बढ़ावा देगा। 3डी अंकीकरणीय उपकरण पुरातात्विक और विरासत के स्थलों के दृश्य प्रारूपों के अंकीय पुनर्निर्माण और प्रलेखन में बढ़ावा देगा। संबंधित विभागों द्वारा भविष्य के तिथियों पर स्थलों के संरक्षण/पुनर्निर्माण को भी यह प्रलेखन सहायता करेगा।

आईजीएनसीए के अंकीय डेटा का विस्तृत भाग जिसमें 1.2 लाख से अधिक स्थिर दृश्य, अंकीकृत पांडुलिपियों के चार करोड़ से अधिक पेज, दुर्लभ पुस्तक और आडियो विजुअल शामिल हैं, बहुत तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। इस विशाल डेटा को आईजीएनसीए के इंट्रानेट पर ऑनलाइन पहुंच बनाने के लिए एक उच्च क्षमता वाला स्टोरेज सिस्टम (नेट एप्स से 50 टीबी) खरीदा गया। यह न केवल आईजीएनसीए के डेटा के एकीकरण में सहयोग करेगा बल्कि पांडुलिपि के लिए राष्ट्रीय मिशन, भारतीय कला और संस्कृति पर राष्ट्रीय डेटा बैंक आदि जैसी विभिन्न परियोजनाओं के अधीन एकत्रित किए गए समान डेटा को भी जोड़ेगा।

कलाकोश प्रभाग

कलाकोश प्रभाग, केंद्र के मुख्य अनुसंधान और प्रकाशन प्रकोष्ठ के रूप में सेवा करता है और कला में उनके बहुपरतदार और बहु-अनुशासन पहलू के साथ जुड़े बौद्धिक और पाठ परंपरा में जांच करता है। पाठ और दृश्य को मौखिक के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और मौखिक और सिद्धांत को प्रयोग साथ समन्वित करते हुए यह कला को सांस्कृतिक व्यवस्था के समग्र ढांचे के अंदर रखता है।

कार्यक्रम 'क'
कलातत्त्वकोश
(भारतीय कला के आधारभूत संकल्पनाओं का कोश)

कलातत्त्वकोश भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विशिष्ट विद्वानों के साथ वार्ता और व्यापक शोध के बाद कला के प्रारंभिक और विभिन्न अनुशासनों प्राथमिक पाठों में आने वाले 250 शब्दावाली की एक सूची तैयार की गई। प्रत्येक अवधारणाओं को 300 प्राथमिक पाठों के द्वारा अन्वेषण किया गया। वर्ष 1988 से जब इस शृंखला का पहला खंड प्रकाशित हुआ तब से पांच खंड आ चुके हैं। वर्ष के दौरान 'आभास' पर शृंखला के अंतर्गत खंड 6 प्रकाशित किया गया।

कलातत्त्वकोश संदर्भ कार्डों की तैयारी: आईजीएनसीए के वाराणसी कार्यालय पर यह कार्य जारी है, जिसमें संदर्भ कार्डों को पूर्वसूचित प्रासंगिक पाठों से तैयार किया जा रहा है। ये संदर्भ कलातत्त्वकोश शब्दावली सं संबंधित हैं, जिनका उपयोग प्रत्येक शब्द पर लेख लिखने के लिए के प्रयोग किया जा रहा है। इस वर्ष, 3153 नये कार्डों को संदर्भ, उद्धरण और उनके अनुवादों के साथ तैयार किया गया।

कार्यक्रम 'ख'
कलामूलशास्त्र
(कला पर मूल पाठों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग के दूसरा निरंतर कार्यक्रम है-वैदिक साहित्य, आगम, तंत्र, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत और नाट्य आदि सभी भारतीय कलाओं सें संबंधित आधारभूत ग्रंथों का समालोचनात्मक संपादन करके टीका टिप्पणियों एवं अनुवाद सहित, उन्हें ग्रन्थमाला

में प्रकाशित करना। इस शृंखला के अलावा आईजीएनसीए ने कुछ अन्य ग्रन्थों को प्रकाशित करने का कार्य लिया है। जो कलामूल शास्त्र शृंखला जैसे वैदिक संस्कार और विभिन्न मूलपाठ इत्यादि के लिए संदर्भ ग्रन्थों का काम करेंगे।

प्रकाशन

क. इस वर्ष शृंखला के अंतर्गत निम्नलिखित ग्रंथों को प्रकाशित किया गया:

1. **न्यूमिस्मैटिक आर्ट्स आफ इंडिया (दो खंडों में)** - मुद्राशास्त्र पर प्रो. बी. एन. मुखर्जी का एक मानक संदर्भ कार्य

2. **भोज का शृंगारप्रकाश** - आलोचनात्क संपादित संस्करण (अनअनुवादित) कालिदास संस्थान, वाराणसी के सहयोग से प्रकाशित।

निम्नलिखित कार्य प्रकाशन प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में है

वैदिक अथवा श्रौत संस्कार (कृष्ण यजुर्वेद)

1. **बौधायन श्रौत-सूत्र:** भवस्वामी के टीका के साथ (खंड एक, दो और तीन) प्रो. टी.एन धर्माधिकारी के द्वारा समालोचनात्मक संपादन के साथ परिचय।

वैदिक/श्रौत संस्कार (सामवेदिक)

2. **जैमिनीय ब्राह्मण:** प्रो. एच.जी. रानाडे द्वारा अनूदित और समालोचनात्मक संपादन।

आगम (वैष्णव, पंचरात्र)

3. **ईश्वरसंहिता :** (पांच खंडों में) प्रो. लक्ष्मीताताचार द्वारा अनूदित और आलोचनात्मक संपादन और (स्वर्गीय) प्रो. वी. वरदाचारी द्वारा विस्तृत प्रस्तावना के साथ पुनरीक्षित।

आगम (शैव)

4. **क्रियाक्रमद्योतिक:** प्रो. फ्रेडरिक द्वारा अनूदित और स्वर्गीय डा. एस. जानकी द्वारा अंशत: समालोचनात्मक संपादन।

शाक्त-तंत्र

5. **मंथान-भैरव-तंत्र (कुब्जिक-आगम):** नेपाल से अनुसमर्थित पांडुलिपि की सहायता से डॉ. मार्क डिच्कोवस्की द्वारा प्रचुर टिप्पणी के साथ संपादित और अनूदित

आगम (शाक्त)

6. **तंत्रसारसंग्रह :** प्रो. के. टी. पांडुरंगी द्वारा अनुवादित और संपादित शैव-शाक्त संस्कार और प्रतिमा विज्ञान पर दक्षिण भारतीय पाठ ।

अलंकारशास्त्र (सौंदर्यशास्त्र)

7. **रसगंगाधारा :** प्रो. रमा रंजन मुखर्जी द्वारा अनुवादित और आलोचनात्मक संपादन (दो खंडों में)

8. **सरस्वतीकंठाभरणम् :** तीन खंडों में डॉ. सुंदरी सिद्धार्थ द्वारा अनुवादित और आलोचनात्मक संपादन।

अन्य भारोपीय भाषाओं के संबंध में भारतीय कला की आधारभूत अवधारणाएं

9. **ग्लॉसरी ऑफ की आर्ट टर्म्स:** स्वर्गीय पं. विद्यानिवास मिश्र द्वारा तैयार 100 की ग्लासरी

संगीत (पूर्वी भारतीय, पूर्व-मध्यकाल)

10. **संगीतनारायण :** डा. मंदाक्रान्ता बोस द्वारा अनुवादित और समालोचनात्मक संपादन

संगीत (उत्तरी भारतीय, पूर्व-मध्यकाल)

11. **नारद का संगीतमकरंद :** डा. एम. विजयलक्ष्मी द्वारा अनुवादित और समालोचनात्मक संपादन

वास्तुकला और नगर नियोजन

12. **समरांगणसूत्रधार :** (चार खंडों में) डा. पी. पी. आप्टे एवं श्री सी वी काण्ड द्वारा संपादित एवं अनुवादित

वैदिक संस्कार

गोपथब्राह्मणः सम्पादक/अनुवादकः प्रो. समीरन चन्द्र चक्रवर्ती

13 **वैदिक ध्वनिशास्त्र**

याज्ञवल्क्य-शिक्षा : संपादक एवं अनुवादक डा. एन. डी. शर्मा

14 **वैखानासाआगम**

मरीचि-संहिताः संपादक एवं अनुवादक प्रो. एस. एन. मूर्ति

15 **दक्षिण भारतीय प्रतिमालक्षण विज्ञान**

तंत्र-समुचयः संपादक एवं अनुवादक स्वर्गीय के. के. राजा।

17. **असाम्प्रदायिक पांचरात्र**

हयशीर्ष-पंचरात्रः संपादक एवं अनुवादक प्रो. जी. सी. त्रिपाठी।

18. **कर्नाटक संगीत**

रागविबोधः संपादक एवं अनुवादक प्रो. रंगनायकी आयंगर

19. **वास्तुशास्त्र**

वास्तु-मंडनः संपादक एवं अनुवादक डा. अनसूया भौमिक।

20. **बौद्ध दर्शन**

शतसाहस्रिका-प्रज्ञा-पारमिताः संपादक एवं अनुवादक डॉ. रत्नाबनसु

21. **शाक्त तंत्र**

साधनमालाः संपादक/ अनुवादकः पंडित सातकड़ी मुखोपाध्याय

22. **शैव आगम**

अघोश्वाचार्या-पद्धतिः संपादक एवं अनुवादक स्वर्गीय डा. एस. एस. जानकी

23. **खगोल-विज्ञान**

राजप्रश्नीयसूत्रमः संपादक एवं अनुवादक डा. एस. आर. शर्मा

24 **अलंकार**

शारदातनय का भावप्रकाशनः संपादक एवं अनुवादक प्रो. जे. पी. सिन्हा

कार्यक्रम 'ग'

कला समालोचन शृंखला

(समालोचनात्मक विद्वता और शोध के प्रकाशनों की शृंखला)

इस शृंखला के तहत निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाश में आये:

1. एलिमेंट्स आफ बुद्धिस्ट आइकॉनोग्राफी आफ आनंद के कुमारस्वामी : कृष्ण देव द्वारा संपादित।
2. अक्रॉस द थ्रेसहोल्ड : मार्था ए स्ट्रान
3. शारदा एंड टाकरी अल्फाबेट्स: ऑरिजिन एंड डेवलॉपमेंट : बी के कौल डीम्बी
4. कल्चरल हिस्ट्री आफ उत्तराखंड : डी. डी. शर्मा
5. इलस्ट्रेटेड बालीसत्रा भागवत पुराण : बी.एन. गोस्वामी
6. द भुवनेश्वर टेम्पल आफ लिंगराज : आर्ट एंड कल्चर लिगैसी: के. एस. बेहरा

कार्यक्रम 'घ'

भारतीय कलाओं का विश्व कोश (न्यूमिसमैटिक आट्स आफ इडिया : प्रो. बी. एन. मुखर्जी)

न्यूमिसमैटिक ऑफ इंडिया के कुल चार खंडों में से खंड -1 (हिस्टॉरिकल एंड एस्थेटिक्स पर्सपेक्टिव्स) और खंड-2 (मास्टरपीस आफ न्यूमिसमैटिक आर्ट्स आफ इंडिया, अलबम खंड) वर्ष के दौरान मुद्रित किए गए। खंड-3 एवं 4 की सामग्री प्रो. मुखर्जी से मिलने की प्रतीक्षा में है।

कार्यक्रम 'ड.'
क्षेत्र अध्ययन

दक्षिण पूर्व एशियाई इकाई

दक्षिण पूर्व एशिया के संस्थानों में सहयोग और पारस्परिक कार्यक्रमों की स्थापना के लिए विद्वानों, सूचना वैज्ञानिकों और पुरालेखाविदों के 6 सदस्यीय आईजीएनसीए के प्रतिनिधि मंडल ने मार्च 2008 में इंडोनेशिया भ्रमण किया। इस भ्रमण के दौरान दक्षिण पूर्व एशिया पर विशाल मात्रा में प्रकाशनों को अधिग्रहीत किया गया।

अंतर-सांस्कृतिक संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत 'प्रयोगशाला में मंदिर निर्माण पर खगोलीय प्रभाव' पर एक भाषण का आयोजन किया गया जिस पर प्रोफेसर विलियम जी. वान डे बोगारडॉन ने संभाषण किया।

श्वियतनाम में महिषासुरमर्दिनी देवी के कर्मकांड और प्रतिमाविज्ञानश नामक अध्ययन किया गया। आर्ट एंड आर्कियोलॉजी ऑफ द मेन लैंड साउथ-ईस्ट एशिया (ए स्टडी आफ द इंडोनेशियन आर्ट एंड आर्किटेक्चर) प्रकाशन के लिए तैयार है।

पूर्वी एशियाई कार्यक्रम

पूर्वी एशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया के बीच आपसी संबंधों के अध्ययन के कार्यक्रम के तहत, 'जुआनझांग एंड द सिल्क रूट' शीर्षक के अंतर्गत प्राचीन काल में भारत-चीन संबंध पर प्रभाग ने मूल्यवान प्रपत्रों के संग्रह को प्रकाशित किया है। आईजीएनसीए में संपन्न सेमीनार के प्रक्रियाओं का यह परिणाम है। इकाई ने 'संस्कृत-चाइनीज ग्लोसरी आफ बुद्धिस्ट टर्म्स' तैयार किया है जिसे अंतिम रूप दिया जा रहा है।

दो अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों का आयोजन केंद्रीय एशिया में किया गया।

1. विदेश मंत्रालय के सहयोग से 8 से 12 जनवरी, 2008 तक 'सिटीज रोड्स एंड कारवां सराएज ऑन द ग्रेट सिल्क रोड- एन एंबलम आफ द लिंकेज थ्रो द ऐज (इंडिया, वेस्ट एंड सेंट्रल एशिया)' का आयोजन किया गया। इस सेमीनार ने क्षेत्र के आपसी भागीदारी सभ्यता और पुराने सांस्कृतिक संबंधो का अन्वेषण किया। भाग लेने वाले उजबेकिस्तान, ताजिकिस्तान, कजाखस्तान, तुर्की, मंगोलिया और चीन सहित केंद्रीय एशियाई देशों से आये। इस सेमीनार के साथ ही थीम पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय विदेश मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी ने किया।

2. 'हिस्ट्री आफ सेंट्रल एशिया कलेक्शन इन इंस्टीच्यूशनस वर्ल्डवाइड': केंद्रीय एशियाई अध्ययन से संबंधित विचारों और अनुभवों के आदान प्रदान के उद्देश्य के साथ सिम्पोजिया के क्रम में यह भारत, रूस और चीन के देशों के विद्वानों को साथ लाने का अंतिम और तीसरा था। अंतरराष्ट्रीय दुनहुआंग परियोजना (आईडीपी) और ब्रिटिश लाइब्रेरी के सहयोग से 17 से 19 मार्च, 2008 तक आयोजित तीन दिवसीय सिंपोजियम जिसे फोर्ड फाउंडेशन ने अनुदान दिया। सिल्क रूट एंड ऑरेल स्टाइन पर भी एक प्रदर्शनी 17 से 19 मार्च, 2008 तक आयोजित किया गया।

प्रभाग के गतिविधियों ने चाइनीज एकेडमी आफ आर्ट्स, दुनहुआंग अकैडमी, चाइना एंड ताइयून यूनिवर्सिटी, शांक्सी प्रॉविंस, चीन जैसे चीनी अकादमिक संस्थाओं से सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया है।

कलाकल्प

प्रभाग को आईएनजीसीए की द्विवार्षिक जर्नल 'कलाकल्प' निकालने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। इस वर्ष अनुसंधान जर्नल 'कलाकल्प' का खंड 2 प्रकाशित किया गया जिसमें कला और संस्कृति पर मूल्यवान आलेख शामिल थे।

वैदिक प्रपाठ का प्रलेखन

दुर्लभ वैदिक कर्मकांडों और वैदिक सस्वर पाठ की तकनीकों के संरक्षण और प्रलेखन कलाकोश एक महत्वपूर्ण परियोजना चला रहा है। इस परियोजना के तहत प्रभाग ने लुप्तप्राय संहिताओं और कर्मकांडों के निष्पादनों के सस्वर पाठ के तकनीकों के प्रलेखन को पूरा किया है। प्रभाग ने बांसवाड़ा में दुर्लभ वैदिक संहिता अर्थात ऋग्वेद के कौषितकी से प्रलेखन प्रारंभ किया है। शुक्लयजुर्वेद के कण्व-संहिता, सामवेद के राणानीय संहिता (गाना), पौर्णमासेस्ती (फुलमून सैक्रीफाइस) का वीडियो प्रलेखन, बालासोर में पिप्लाद संहिता का प्रलेखन; हनोवर में राणानीय संहिता; सोलापुर के अग्निष्टोम कर्मकांड का प्रलेखन; अंबत्तोर में कण्व-सतपथ-ब्राह्मण; और पालघाट और केरल के पांजल में बहुत ही दुर्लभ सामवेदिक परंपरा जैमनीय साथ ही साथ तैत्तरीय और साकल्य संहिता केरलीया का प्रलेखन का उत्तरदायित्व लिया है। सभी रिकॉर्डिंग के सी.डी. प्रभाग में उपलब्ध हैं।

पहले चरण में दक्षिण भारत से 'प्रोक्योरमेंट आफ द टूल्स एंड यूटेंसिल्स यूज्ड इन द वैदिक सैक्रीफाइसेस' पर एक अन्य परियोजना के तहत उनके सभी भिन्नताओं के साथ और एक 'इलस्ट्रेटेड कैटलॉग' का प्रकाशन तथा एक प्रदर्शनी सामग्री तैयार किया गया है।

नारीवाद: लिंग, संस्कृति और सभ्यता नेटवर्क

नारीवाद: लिंग, संस्कृति और सभ्यता जाल मार्च 2005 में शुरू किया गया। आईजीएनसीए के दृष्टिपत्र विशेषतया भारतीय लोकाचार और वास्तविकता और दृष्टि संबंधित अनुसंधान का एक प्रतिरूप का विकास, और महिलाओं का कला और संस्कृति में योगदान आईजीएनसीए का एक अविभाज्य प्रयास की बात करता है।

हालांकि विकृति और अत्यधिक साधाराणीकरण से संरक्षा के लिए इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि लिंग अध्ययन में समकालीन संवाद के साथ महिलाओं की संस्कृति के विशाल संसाधन को जोड़ा जाए। लिंग अध्ययन के आवश्यक तत्व के रूप में नारीवाद का लक्ष्य महिलाओं के सांस्कृतिक संसाधन और ज्ञान व्यवस्था प्रसंग में लाना है।

इस वर्ष, मिथिला और दिल्ली में कार्यरत महिला चित्रकारों द्वारा मधुबनी चित्रकला पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। उन्होंने विशाल पैनल और व्यक्तिगत चित्र निर्मित किया जो प्रभाग के प्रवेश कक्ष में प्रदर्शित किया गया।

दो और कार्यशाला- वोमेन्स राइटिंग इन संस्कृत फ्राम 300 बीसी टू 2000 एडी' और 'जेंडर स्टडीज' का भी आयोजन किया गया। नारीवाद से संबंधित विभिन्न प्रकरणों पर सात डीवीडी तैयार किए गए और वे बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। उनके शीर्षक हैं: 'ए डायलॉग विथ वोमेन प्रीस्टसेसेस आफ लेप्चाज'; 'द जर्नी आफ भिक्खुनीज'; 'द मीरासंस आफ पंजाब, बार्न टू सिंग'; 'दक्षिण कन्नण-लैंड आफ द मद गॉडेस'; 'सीकिंग मोक्ष: द वैष्नाविस आफ वृंदावन'। 'मनु ऑन वूमेन' और 'जग्गी देवी, द फ्रीडम फाइटर आफ उत्तर प्रदेश' शीर्षक की दो छोटी पुस्तिकाएं भी इस पीरिएड में निकाली गई।

गतिविधियॉ सेमीनार/ प्रदर्शनी

विद्वानों की बैठक

कलामूलशास्त्रशृंखला में जोड़ने या शामिल करने के लिए पाठों के पहचान हेतु 18 से 19 जुलाई, 2008 को आईजीएनसीए में एक बैठक में विद्वान इकट्ठे हुए। विद्वानों से मूल्यवान सुझाव और दिशानिर्देश प्राप्त किए गए।

आगम पर सेमीनार

प्रभाग द्वारा 'द थ्योरी एंड प्रैक्टिस इन द आगम (इन रिलेशन टू आर्ट्स) विषय पर 14 से 16 मार्च, 2008 को आगम पर एक सेमीनार का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली और बाहर के 40 विद्वानों ने भाग लिया। सेमीनार के पूरे होने के बाद संगीत और कला पर दो आयोजन किए गए। उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर ने किताब-ए-नौरस पर आधारित ध्रुपद परंपरा को प्रस्तुत किया और प्रो. आर. सत्यनारायण के निर्देशन में श्री नंद कुमार और उनके सहयोगियों ने कर्नाटक में प्रचलित नाट्य और दिक्पाल पूजा विधि प्रस्तुत किया।

कलातत्वकोश के खंड सात-पंद्रह में विभिन्न समाविष्टों की विशिष्टता और प्रकृति पर बहस करने के लिए वाराणसी कार्यालय ने तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 26-28 दिसंबर, 2008 को किया, जिसमें कला के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों ने भाग लिया।

मार्च 2008 के अंतिम सप्ताह के दौरान 'फिलॉस्फी आफ लैंग्विज विद स्पेशल रिफरेंस आफ वाकपदीय आफ भतृहरि' पर एक सेमीनार आयोजित किया गया जिसमें विद्वानों ने भाषायी दर्शन के भारतीय सिद्धांत पर मुख्य रूप से पेपर प्रस्तुत किए।

वैदिक विरासत सप्ताह

वैदिक विरासत सप्ताह दिसंबर 2007 में आयोजित हुआ जिसमें फलदायी परस्पर क्रिया के लिए वर्तमान में उपलब्ध सभी पाठों के 50 वैदिक पंडित सहित आधुनिक परंपरा के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

इस कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य हमारे वैदिक परंपरा के उच्च विरासत का संरक्षण और प्रचारित करने के लिए विद्वानों और पंडितों का मार्गदर्शन प्राप्त करना था। यह एक विशिष्ट कार्यक्रम था, जिसने दोनों वैदिक पंडित और महिला रिषिकाओं के द्वारा वैदिक सस्वर पाठ परंपरा का प्रदर्शित किया।

वैदिक शिक्षण और बंगाल के सस्वर पाठ की क्षेत्रीय परंपरा के अध्ययन और प्रलेख के क्रम में कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रो. रत्न बसु के समन्वय में पश्चिम बंगाल के नबाद्वीप (नादिया) में एक दो दिवसीय सेमीनार मार्च 28-29, 2008 को आयोजित किया गया।

जनपद सम्पदा प्रभाग

जनपद सम्पदा प्रभाग वातावरण-संस्कृति और सामाजिक-आर्थिक प्रसंगों में संस्कृति के प्रासंगिक पहलुओं से समुदायों की जीवन शैली, परंपराओं, लोकविद्या एवं कला प्रणालियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन से संबंधित है। मौखिक परंपराओं पर केंद्रित, इसकी गतिविधि विभिन्न सांस्कृतिक समूहों तथा समुदायों के बीच अंतस्संबंधों पर जोर देते हुए, बहुविषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन तक फैलते हुए विस्तृत सतह को कवर करता है।

कलाकोश कार्यक्रम के अनुपूरक, जनपद संपदा कार्यक्रम पाठ से छोटे और आण्विक समाज के रंगबिरंगे विरासत संपन्न प्रसंग की ओर परिवर्तन है।

दैनंदिन जीवन के साथ जुड़े लोकप्रिय भारतीय शब्द जैसे कि जन, लोक, देश, लौकिक और मौखिक कुंजी कार्यक्रम को संपन्न करने के लिए शब्द के रूप में सहायक होते हैं। इस प्रभाग की गतिविधियां व्यापक रूप से अधीन हैं: (क) नृजातीय वर्णनात्मक संग्रह ; (ख) इवेंट्स और मल्टीमीडिया प्रस्तुतीकरण; (ग) जीवन शैली अध्ययन जिसके दो कार्यक्रम हैं, (1) लोकपरंपरा और (2) क्षेत्रसंपदा।

कार्यक्रम 'क'
मानव जाति वणर्नात्मक संग्रह

उत्तर पूर्वी गतिविधियों के अन्तर्गत, 1000 से अधिक चीजों- कपड़ा, जेवरात, जैकेट, साफा, पगड़ी, हथियार, युद्ध-कोट, दाओस, कर्मकांडीय सामग्री, लोक और समकालीन चित्रकलाएं इत्यादि उत्तरी पूर्व भारत के जनजातियों और समुदायों से प्राप्त किए गए। प्रमुख समुदायों में जेमा नागा, रोंगमी, हमर, प्नार, खेल्मा, खाम्प्टी, इदु-मिसिमी, अपातनी, बियाते, वाइफी, दिमासा, कूकी, हरांगखुल, कोम, मरिंग, खासी, गारो ; और नागालैंड की जनजातियां शामिल हैं।

राम कथा परियोजना के अन्तर्गत मुखौटा, कठपुतलियां, परिधान, सूची, चित्रकला, साफा, लुकाछिपी , 1200 फोटाग्राफ, ऑडिया वीडियो प्रलेखन के 187 घंटे और मध्य प्रदेश से 500 गानों के ऑडियो प्रलेखन ग्रहीत किए गए।

अहनद नाद परियोजना के अन्तर्गत फुलकारी दरी और संगीत के यंत्र जैसे नृजातिवर्णनात्मक सामग्री एकत्रित किए गए।

मनसा संस्कार और अनुष्ठान से जुड़े सांस्कारिक वस्तुएं, सूची, चित्रकला, प्रतिमाएं, मूर्तिशिल्प, परिधान, मुखौटा प्राप्त किए गए।

तीन क्षेत्र कार्य से पाषाण कला गतिविधियों के लिए उत्पन्न किए गए सामग्री: लगभग 300 फोटाग्राफ,19 घंटे का वीडियो रिकॉर्डिंग (गैर-संपादित), 470 स्लाइडों पर 150 लाइन की रेखाचित्र।

कार्यक्रम 'ख'
आदि दृश्य

आईजीएनसीए के शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण कार्य मानव की मूल/मौलिक अवबोधन शक्तियों में से कलात्मक आविर्भावों का अन्वेषण करना है। संभवतय मानव को अपनी दृश्य एवं श्रव्य आदिम शक्तियों के फलस्वरूप ही संसार के प्रति जागरूकता का बोध हुआ।

शैलकला आदि दृश्य कार्यक्रम का महत्वपूर्ण संघटक है। इस परियोजना के लिए एक बहुअनुशासनात्मक अभिगम अपनाया जा रहा है। क्षेत्रीय प्रलेखन विभिन्न अनुशासनों जैसे कि पुरातत्विद्, मानवविज्ञानी, लोकविशेषज्ञ, नृवानस्पतिक, भूगर्भविज्ञानी, रासायनिज्ञ इत्यादि, और संबंधित क्षेत्र/परिक्षेत्र के संस्थाओं के सहयोग से किया जा रहा है। परियोजना का उद्देश्य है: (1) मूलपाठ विषयक और प्रसंगानुकूल वीडियो और फोटो प्रलेखन (2) पुरातात्विक अनुसंधान के लिए भीतरी प्रदेशों के लोगों के साथ संचार के लिए, संबंधित लोकसाहित्य और प्राकृतिक तथा मानवनिर्मित परिदृश्यों के प्रलेखन के आधार पर पाषाण कला भूदृश्य के जैवसांस्कृतिक मानचित्र, मानसिक और वातावरणीय मानचित्रावली (3) ढांचागत, पारिस्थितिकी और, स्थानीय तकनीक और सामग्री को वरीयता देते हुए दुर्लभ मामलों में सीधे संरक्षण के लिए सुझाव देना। (4) फोटो एवं वीडियों अभिलेख को विकसित करना (5) इस क्षेत्र में वीडियों प्रलेखन के आधार पर डाक्यूमेंट्री तैयार करना। (6) प्रदर्शन (स्थायी, चल, अस्थायी) को संगठित करना (7) मुद्रित और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों में प्रकाशन निकालना ।

पाषाण कला और संबंधित विषय का अध्ययन और प्रलेखन

क्षेत्र अध्ययन

वर्ष के दौरान कर्नाटक, राजस्थान और आंध्रप्रदेश में क्षेत्रीय कार्य किया गया। 3 से 16 मई, 2007 के दौरान कर्नाटक के बेलारी जिले में 13 पाषाण कला स्थलों और 5 गांवों का प्रलेखन किया गया। पाषाण कला स्थल हैं: संगनकल्लू, कुपगल, सिरवार, चोदामा पहाड़ियां,

वीरापा मंदिर, बेलारी किला, सदाशिव मंदिर, हालकुन्डी, अपहायनली, करोकल गुड्डा, टिक्कलकोटि, कोरगुडू और मसलाया गुड्डा (हम्पी)। गांव हैं: संगनकल्लू, कुपगल, सिरवार, हालकुन्डी और अपहायनली।

2 से 11 जनवरी, 2008 के दौरान राजस्थान के बूंदी जिले में प्रलेखन कार्य किया गया। 13 पाषाण कला स्थल और तीन गांव प्रलेखित किए गए। पाषाण कला स्थल हैं: केवरिया, सुइकनक, धारवा, नालदेह, चापरिया, उनडिमाया, नचला, नारदाह, भेरुपुल, खामलोइ, गारर्दा, कूकरझार और भीमलाट। गांव हैं: केवरिया, खामलोइ और गारर्दा।

14 से 24 फरवरी, 2008 के दौरान आंध्रप्रदेश के हैदराबाद, मेडक, महबूबनगर, वारंगल और खम्माम जिले में प्रलेखन कार्य किया गया। इन जिलों में निम्नलिखित पाषाण कला क्षेत्रों/स्थलों को प्रलेखित किया गया-कोकापेट, शिवारू, वेंकटपुर, वरगल, धुपाटागट्टू, संगनुनपल्ली, पांडुवुला गट्टू और रामचंद्र पुरम। पाषाण कला प्रलेखन के अलावा, मानवजातीय-पुरातात्विक अध्ययन के लिए चार गांवों- शिवारूवेंकटपुर, संगनुनपल्ली, रावुल्लापल्ली और रामचंद्र पुरम में प्रलेखन किया गया।

प्रलेखन और सूचीपत्रण

अर्जित क्षेत्र डेटा के प्रलेखन और सूचियां तैयार किए गए।

(1) कर्नाटक के बेलारी जिले में सर्वेक्षण किए गए पाषाण कला के क्षेत्रीय डेटापत्रक व्यवस्थित और कंप्यूटरीकृत किए गए।

(2) लद्दाख क्षेत्र के 1200 फोटो और कर्नाटक के 900 फोटो के सूचीपत्र किए गए लद्दाख क्षेत्र के 250 फोटो कंप्यूटर में डाले गए।

(3) उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, लद्दाख, झारखंड, उडीसा और कर्नाटक से वीडियो क्षेत्र डेटा का प्रारंभिक संपादन किए गए।

आदि श्रव्य

आदि श्रव्य परियोजना के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रमों की मेजबानी की गई ।

अनहद नाद: सेमीनार/प्रदर्शनी/अभिनय

तीन दिवसीय त्यौहार जिसमें एक राष्ट्रीय सेमीनार, प्रदर्शनी और सायं तमाशा, लोक और शास्त्रीय दोनों शामिल था, का आयोजन पंजाबी अकादमी, दिल्ली के सहयोग से 1से 3 फरवरी तक आयोजित किया गया।

सेमीनार

भारतीय संगीत में संदर्भ का मार्गदर्शन शब्द नाद -ब्रह्म, जो भौतिक से आत्मिक गति पर जोर देता है। अनहत (जिसपर चोट न हो) और आहत (दबावयुक्त) ध्वनि में भेद किया गया है। अनहत स्वर में ही ईश्वर प्रकाशमान होता है। माना जाता है कि अनहत नाद निरंतर अभ्यास द्वारा केवल योगियों द्वारा सुना जाता है।

विशिष्ट विद्वान जैसे डा. जसवंत सिंह नेकी, प्रो. एस.एस. नूर, प्रो. मोहिंदर कौर गिल, प्रो. माथू मोहन, भाई बलदीप सिंह सेमीनार में भाग लिया। अपने देश में फुलकारी परंपरा के लिए उत्तरदायी पाकिस्तान से सुश्री कुरात-उल-आइन ने भी सेमीनार में भाग लिया।

साल पर कलाकार कार्यशाला

अनहद पर इवेंट के बाद कार्यशाला का आयोजन किया गया जो साल परंपरा-एक सांस्कृतिक निष्पादन जो पंजाब में अशांति के कारण प्रभावित हो गया था- के छितरे हुए कलाकारों को साथ लाया। संस्कार में लोक महानायक के अभिनय शमिल थे। कार्यशाला ने 18 लोक महानायकों को पुनर्जीवित/तैयार किया।

प्रदर्शनी

पंजाब की हस्तकला जिसमें फुलकारी, संगीत वाद्ययंत्र और प्रसिद्ध फोटोग्राफर डा. देविन्दर सिंह के प्रसिद्ध फोटोग्राफ कांत चित्र को प्रदर्शित करने के लिए खुले में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कुछ प्रदर्शित संगीत वाद्ययंत्र डफ, डमरू, किंगारी, धाड, अलगोजा और बांसुरी थे।

भौतिक उपादानों और चित्रकला से रोजमर्रा उपयोग की वस्तुओं और गाड़ी, बैल गाड़ी पुनर्निमित झोपड़ी पर एक ग्रामीण जीवनशैली दृश्य पुनर्निमित किया गया।

मेला

स्थानीय हस्तकला व्यक्तियों को सामने लाने के क्रम में पंजाब के विभिन्न हस्तकला वस्तुओं को बेचने और प्रदर्शित करने के लिए एक मेला का आयोजन किया गया। पारंपरिक शैली के द्वार के साथ स्थानीय ग्रामीण शैली में डिजाइन किए गए पंद्रह स्टॉल विशेष तौर पर खड़े किए गए।

प्रदर्शन

पंजाब के संगीत परंपरा को मनाने के लिए, मेला में अभिनय के लिए पंजाब के लोक कलाकार आमंत्रित किए गए। मालवाई गिद्धा, साल, गतका, धाडी, जंगम, लोक आर्केस्ट्रा, नकाल, बाजीगर, नाग बीन जैस लोक प्रदर्शन इवेंट्स के मुख्य विशेषताएं थीं।

प्रतिष्ठित कलाकार ईदू शरीफ धाडी, हमीद अली खान, हंसराज हंस, गुरमीत बावा, वादली बंधु, सईदा बानू, मेजर सिंह, कमल हीर, अब्दुल नियाज कव्वाल, मनप्रीत अख्तर और दलेर मेंहदी ने पूरी तीन दिन शाम को निष्पादित किया।

प्रकाशन

इन इवेंट्स के उद्घाटन समारोह में 'भगत बानी-श्री गुरु ग्रंथ साहिब- द वर्ल्ड एंड इट्स रेजोनेंस' सेमीनार कार्यवाई पर आधारित प्रकाशन को प्रकाशित और जारी किया गया।

इस अवसर पर पंजाब के संगीत विरासत के भाग के रूप में आयोजित श्री गुरुग्रंथ साहिब से भगत बानी के निष्पादन का एक सीडी रोम उत्पादित और जारी किया गया।

महोत्सव का उद्घाटन माननीया केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्रीमती अंबिका सोनी द्वारा किया गया। माननीया मुख्यमंत्री, दिल्ली श्रीमती शीला दीक्षित विदाई कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। प्रदर्शनी, मेला और प्रदर्शन ने लगभग 20000 लोगों को आकर्षित किया।

2) हिन्द इस्लामी तहजीब के रंग-अ़कीदत के संग

सेमीनार/लोकव्याख्यान/प्रदर्शनी/प्रदर्शन

'रिलीजियस आइडेंटिटीज एंड कान्फ्लुएंस आफ ट्रेडीशन' विषय के अन्तर्गत आठ दिवसीय प्रतिष्ठित इस्लामी विद्वानों द्वारा राष्ट्रीय सेमीनार, लोक व्याख्यान, प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक प्रदर्शन का आयोजन 1 से 8 अप्रैल, 2008 तक किया गया। इसका उद्देश्य इस्लाम की भक्ति के विभिन्न रंगों से जुड़े अनजान आनुष्ठानिक परंपराओं को प्रदर्शित करना था। ये परंपराएं काव्य, पाठ के तरीकों, संगीत, लेखन, वास्तुकला, कहानी सुनाने, गाथाओं, सूफी और पूजा तथा भक्ति की देशज परंपराओं में प्रतिबिम्बित होती हैं। इसने इन परंपराओं की जड़ें भारतीय जमीन विशेषतौर पर स्थानीय और क्षेत्रीय संस्कृति में हैं, को प्रकाशित किया।

राष्ट्रीय सेमीनार

चार दिवसीय सेमीनार 1 से 4 अप्रैल, 2008 का उद्घाटन प्रतिष्ठित विद्वान और जामिया मिलिया इस्लामिया के पूर्व कुलपति प्रो. शाहिद महदी ने किया। सेमीनार के उद्घाटन सत्र के

बाद नियाजी बंधुओं द्वारा कव्वाली प्रस्तुत किया गया। सेमीनार निम्नलिखित विषयों पर विवेचित किया गया: पवित्र स्थल, पवित्र काव्य, पवित्र संगीत, साहित्यिक प्ररूप, क्षेत्रीय विभिन्नताएं और लोक रूप प्रो. अख्तरुल वसाय, प्रो. इशाक खान, प्रो. लियाकत मोइनी, प्रो. एस. ए. आर. बिलग्रामी, एस. जे. आर. बिलग्रामी, प्रो. मदन गोपाल सिंह और प्रो. मुमताज करीम सहित विद्वानों ने सेमीनार में हिस्सा लिया। श्री अजीज बरनी, डा. अली जावेद और प्रो. सुघरा मेहदी सत्रों की अध्यक्षता करने वालों में शामिल थे।

लोक व्याख्यान

परंपरा के संगम को सामने लाने के लिए चार लोक व्याख्यानों की एक श्रृंखला का आयोजन किया गया। श्री सईद नकवी, सुश्री सईदा सैय्यदीन हामिद, प्रो. गोपीचंद नारंग और प्रो. असगर अली इंजीनियर ने निम्नलिखित विषयों पर क्रमशः व्याख्यान दिया: 'उर्दू गजल: सूफी हेरीटेज एंड द इंडियन माइंड्स', 'हिंदुस्तान की मुस्तरखा तहजीब', 'सेक्यूलर इथोस एज रेफलेक्टेड इन उर्दू पोएट्री' और 'हिंद-इस्लामी तहजीब का आगाज और खातून का किरदार'।

प्रदर्शनियां

इवेंट के दौरान निम्नलिखित प्रदर्शनियां आयोजित की गयीं:

हिंद इस्लामी तहजीब के रंग-रेफलेक्टिंग द लाइफ स्टाइल आफ इंडियन मुस्लिम्स,

कैलीग्रैफिक पेंटिंग्स-राजा जैदी

एक्जीबिसन ऑन रेलीजियस पोस्टर्स-यूसुफ सईद

प्रदर्शन

इवेंट के दौरान सायं में सांस्कृतिक प्रदर्शनों कीश्रृंखला आयोजित की गई। इसमें असम के जिक्र परंपरा, रामपुर के वारसी बंधुओं की कव्वाली, कश्मीर के भांड पाथर, लखनऊ की नसीरी परंपरा, मिलाद का अनुष्ठान, टोंक का चाहर बयात, काश्मीर की नात खानी और दारूद खानी शामिल थे। इसके अलावा, मदन गोपाल सिंह द्वारा सूफी गाना प्रस्तुत किया गया। सीमा अग्रवाल द्वारा एकल महिला सूफी संत बसरा की राबिया की जीवन पर एकल नृत्य और संगीत का प्रदर्शन किया गया। हबीब तनवीर का मशहूर नाटक आगरा बाजार भी सायंकालीन प्रदर्शन का हिस्सा था।

इस परियोजना के तहत दो डीवीडी तैयार किए गए हैं: एक, उत्तरी भारत के मुस्लिमों में लोक परंपरा पर केंद्रित यूसुफ सईद द्वारा अकीदत के रंग। दूसरा, इसी विषय पर 2007 में आयोजित प्रदर्शन पर।

कार्यक्रम 'ग'

जीवन शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न समुदायों की मौखिक परंपराओं पर विशेष जोर दिया गया। यहां कलात्मक अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवन शैलियों तथा जीवन कार्यों में सन्निहित रूप से देखा जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लोक परम्परा एवं क्षेत्र सम्पदा दो मुख्य कार्यक्षेत्र हैं।

लोक परम्परा

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सांस्कृतिक समुदायों की उन जीवन शैलियों पर जोर दिया गया है जो उनके भौतिक तथा पारिस्थितिक निवास, सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं एवं उनके सृजनात्मक तथा सौंदर्यात्मक जीवन से प्रकट होता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाएं, क्षेत्रीय आधार पर किए गए अध्ययन के चतुर्दिक घूमती हैं। वर्ष 2007-2008 में निम्नलिखित दीर्घ-कालिक परियोजनाएं प्रारंभ की गयीं:

राम कथा इन परफार्मेटिव ट्रेडीशंसः अंकन, मंचन और वाचन

कार्यशाला/सेमीनार/प्रदर्शनी/प्रदर्शन

प्रदर्शन कला में राम कथा-प्रलेखन कार्यशाला

प्रदर्शन परंपरा के श्रव्य-दृश्य प्रलेखन और पूरे देश से विभिन्न लोक और जनजातीय समूहों से संबंधित कलाकार कार्यशालाएं इस प्रलेखन कार्यशाला की भाग थीं। आईजीएनसीए में आठ कार्यशालाएं संपन्न हुई।

(1) ***डुंगरी भील्स, गुजरात द्वारा राम सीतामणि वार्ताः*** प्रतिष्ठित लोक विद्वान डा. भगवान दास पटेल के समन्वय से इन कार्यशालाओं की शृंखलाओं में पहली गुजरात के डुंगरी भील्स 27 नवंबर से 6 दिसंबर, 2007 तक आयोजित किए गए। उन्होंने राम सीतामणि वार्ता का प्रदर्शन किया। डुंगरी भील्स में राम कथा का प्रदर्शन उपज और बीज से निकट से जुड़ा है। इस वर्ष में दो बार माघ और भाद्रपद के महीनें में प्रदर्शित किया जाता है। कार्यशाला से 35 घंटें के प्रलेखन का लाभ हुआ।

(2) ***अंकिया भावना शैली, असम में रामायणः*** श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी के सहयोग से दूसरे समूह ने 10 से 20 दिसम्बर, 2007 तक माजुली से प्रदर्शन आयोजित किया गया। यह मध्य कालीन संत कवि शंकरदेव, जिन्होंने कई नाटक लिखे जिसमें राम विजय बहुत ही लोकप्रिय हैं और जो माधव कंदली के रामायण पर आधारित है, द्वारा

स्थापित 'सत्र' परंपरा से संबंधित है। नाटक अंकिया भावन शैली में प्रदर्शित किया जाता है। ये गायन (सिंगर्स) और बायंस (संगीतकार) की सक्रिय भागीदारी वाले संगीतमय नाटक हैं। कार्यशाला को 25 घंटे के प्रलेखन का लाभ हुआ।

(3) ***दांग पुतुल शैली, पश्चिम बंगाल में राम कथा:*** लोक और जनजातीय सांस्कृतिक समाज, कोलकाता के सहयोग से 21 से 31 दिसम्बर, 2007 तक कठपुतलियों के पश्चिम बंगाल से दो समूह- राड पपेट (दांग पुतुल) और स्क्राल पेंटिंग (पटुआ) कलाकारों का प्रलेखन किया गया। इसमें मंच पर केवल कठपुतले ही नहीं थे बल्कि इन्हें मंच के पीछे से चलाने वाले पपेटीअर्स जिन्होंने मनोयोग पूर्वक प्रदर्शन से कठपुतलों को लय प्रदान किया, भी थे। कठपुतले चलाने वाले अपने स्वयं के नाटक लिखते हैं जो जात्रा परंपरा से बहुत ही अत्यधिक रूप में प्रभावित होते हैं; संगीत के बनावट लोक धुन, लोक प्रिय गानों और फिल्म संगीत से प्रभावित होते हैं। कार्यशाला को 25 घंटे के प्रलेखन का लाभ हुआ।

पटुआ सूची में राम कथा (पश्चिम बंगाल के पटुआ): पटुआ (सूची चित्रकला कलाकार) मुसलमान हैं, उनके दो नाम हैं, मुसलमान और हिंदू। वे गाना और चित्रण साथ-साथ करते हैं। उनके द्वारा तैयार सूची (पट) शैली और संयोजन में अतुलनीय होते हैं। कार्यशाला को 5 घंटे के प्रलेखन का लाभ हुआ।

(4) ***हिमाचल प्रदेश की राम कथा:*** अगला समूह हिमाचल प्रदेश से आया और हिमाचली अकैडमी आफ आर्ट्स के सहयोग से 3 से 10 जनवरी, 2008 तक प्रदर्शन किया। यह समूह छः उपसमूहों से निर्मित था: गद्दी (चंबा भरमौर), संस्कार गीत (कांगड़ा), बरलाज (शिमला), छारी (फागुल), रामायणी (कुल्लू)। कांगड़ा की एक 82 वर्षीय महिला चारण ने राम और सीता पर गाना गाया जो जन्म, विवाह और अन्य पवित्र अवसरों से जुड़े विभिन्न संस्कारों पर गाये जाते हैं। हिमाचल के राम कथा प्रदर्शन गीत, नृत्य, संस्कार और सामुदायिक भोज के साथ जुड़े हैं। कार्यशाला से 40 घंटें के प्रलेखन का लाभ हुआ।

(5) ***मेवात, राजस्थान के मुसलमान जोगी के द्वारो राम कथा:*** 10 से 18 जनवरी, 2008 तक राजस्थान से जो समूह आया वे मेवात के जोगी समुदाय के मुसलमान और मंगियार जो राजस्थान के रेगिस्तान के मुसलमान हैं, थे। जोगी 'लंका चढ़ाई' गाये जो कवि निज़ामत मेव जिनका निधन 360 वर्ष पूर्व हो गया था, का संयोजन है। ये गीत लिखित नहीं हैं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मौखिक रूप से पारेषित होते हैं। समूहों को लाने में रूपयान संस्थान, जोधपुर लाने में समन्वय प्रदान किया। कार्यशाला से 15 घंटें के प्रलेखन का लाभ हुआ।

(6) ***मंगनिया राजस्थान द्वारा राम कथा:*** कबीर, सूरदास, मीराबाई और तुलसीदास के कार्यों से प्रेरणा प्राप्त करते हुए मंगनिया रामायण राम भजन के रूप में गाते हैं। कार्यशाला से 15 घंटें के प्रलेखन का लाभ हुआ।

(7) ***मणिपुर में लीबा शैली में राम कथा:*** अगला मणिपुर का वारी लीबा परंपरा था। यह कहानी कहने का कथात्मक रूप है और इसका प्रदर्शन मैतिलिआन (मणिपुर) में किया जाता है। समय के साथ कहानी कहने की यह कथात्मक कला, जो एक समय मैती में लोकप्रिय थी और विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, या त्यौहार के अवसर पर राजा की उपस्थिति में प्रदर्शित किया जाता था, धीरे-धीरे अपना महत्त्व खो रही है। फिर भी कुछ नई पीढ़ी के उत्साही अपने पुराने गुरुओं की परंपरा के संरक्षण में रुचि रखते हैं। यह श्री सदानंद सिंह द्वारा प्रदर्शित किया गया। कार्यशाला से दो घंटे के प्रलेखन का लाभ हुआ।

(8) ***पौड़ी, गढ़वाल की राम कथा:*** 6 से 13 फरवरी, 2008 तक पौड़ी गढ़वाल की तीन विशिष्ट परंपराएं प्रलेखित की गई। नाटक रूप में राम लीला; राम व्रत- ढोलक के साथ राम व्रत का गायन: डोल-डमारू और लोक गायन जो राम के चतुर्दिक केंद्रित है और विभिन्न अवसरों पर नृत्य के साथ गाये जाते हैं। थाड्या चौफला के रूप में जाना जाने वाला रंग पटल (रिपरतोयरे), कृषि चक्र की शुरुआत के समय जब बसंत पंचमी के अवसर पर बैलों को जोतने में लगाया जाता है, प्रदर्शित किया जाता है। कार्यशाला से 25 घंटे के प्रलेखन का लाभ हुआ।

चित्रकला कार्यशाला:

प्रदर्शन शैली पर विभिन्न क्षेत्रों के कलाकारों के कार्यशालाओं के अतिरिक्त, दो कार्यशाला मिथिला और गोंड चित्रकारों, जो अपने तरह का पहला था, आयोजित किया गया।

मिथिला चित्रकारों का राम कथा: 20 फरवरी से 12 मार्च के दौरान कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें चित्रकारों ने मिथिला के महिला चित्रकारों के परिप्रेक्ष्य में संपूर्ण राम कथा कपड़े पर चित्रित किया गया। कार्यशाला के दौरान 10 सूचियों को चित्रित किया गया।

मध्य प्रदेश में गोंड चित्रकारों की कार्यशाला: गोंडी रामायण को वर्णित करते हुए 34 फ्रेम गोंडी शैली में चित्रित किए गए।

रामायण परंपरा पर फिल्म:

इस परियोजना के अंतर्गत दो फिल्म, उत्तर-पूर्व में रामायण परंपरा और गढ़वाल में सीता मेला तैयार किए गए हैं। आईजीएनसी टीम द्वारा पौड़ी गढ़वाल के 105 वर्ष पुराने राम लीला प्रदर्शक को प्रलेखित किया गया।

दूरदर्शन पर प्रसारण के लिए और व्यापक वितरण के लिए एक से दो घंटे के 33 डीवीडी तैयार किए गए।

प्रकाशन:

संपूर्ण गोंडी रामायण हिंदी में अनुवादित किया गया और प्रबन्ध प्रेस में भेजने के लिए तैयार है। बच्चों की कार्यशाला: 27 नवंबर से 13 फरवरी के दौरान लोक कलाकारों के साथ स्कूल बच्चों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में बच्चों ने कलाकारों से आदान-प्रदान किया और उनके साथ मंच पर हिस्सा लिया। उन्होंने अपने पोशाक, साज सज्जा, भाषा और संस्कृति के बारे में सीखा।

कहानी सुनाने की कार्यशाला:

स्कूल बच्चों के लिए एक दिवसीय कहानी सुनाने की कार्यशाला का आयोजन किया गया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित विद्वान, प्रो. पौला रिचमैन और कहानीकार सुश्री इंदिरा मुखर्जी ने राम परंपरा पर विभिन्न लोक कहानियों को प्रस्तुत किया। कार्यशाला का दृष्टिकोल्ला सकारात्मक था, जहां बच्चों ने मुक्त भाव से आदान-प्रदान किया और अपनी पसंद के चरित्रों के बारे में चर्चा किया।

राष्ट्रीय सेमीनार

12 से 15 मार्च तक 'राम कथा इन परफार्मेटिव ट्रेडीशंस: अंकन, मंचन और वाचन' पर चार दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार-विमर्श किया गया: 'राम कथा और रिचुअल स्पेसेज', 'राम कथा एंड सोशल स्पेसेज', 'राम कथा: टेक्ट्स एंड कांटेक्ट्स' , ' राम कथा: परफार्मेटिव एंड पिक्चोरियल स्पेसेज', 'राम कथा: कान्फ्लुएंसेश एंड इन्फ्लुएंसेश', 'राम कथा : सोसियो-कल्चरल एंड ज्याग्रैफिकल लैंडस्केप्स' एंड 'मोड्स ऑफ ट्रांसमिसन एंड पैट्रोनेज सिस्टम'। अमेरिका की प्रो. पौला रिचमैन, प्रो. मालिनी भट्टचार्य, प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी, प्रो. कपिल तिवारी, श्री भगवान दास पटेल, प्रो. डीपी पटनायक, प्रो. ज्यौतिन्दर जैन, प्रो. के. नच्चीमुत्थु, प्रो. एच शिव प्रकास और मलेशिया के प्रो. गुलाम सरवरा यूसुफ सहित प्रतिष्ठित विद्वानों ने सेमीनार में भाग लिया। डा. कपिला वात्स्यायन ने सेमीनार का उद्घाटन किया और मुख्य संबोधन किया।

प्रदर्शनी

आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल के सहयोग से 9 दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उत्तरी-पूर्व; और दक्षिणी पूर्व एशिया सहित विभिन्न क्षेत्रों के मुखौटा, कठपुतली, पोशाक, चित्रकला, सूची, साफा, और बैकड्रॉप प्रदर्शनी में प्रदर्शित किए गए।

प्रदर्शन

छः सांस्कृतिक प्रदर्शन का आयोजन किया गया। बुन्देली राम कथा उद्घाटन समारोह में प्रदर्शित किया गया जबकि आद्योपांत भीली कलाकार उपस्थित थे। सायंकाल में कुमायूं की कुमायुंनी रामलीला, मणिपुर की राम लीला और वारी लीबा, मथुरा का सुंदरकथा और गढ़वाल का राम्मान प्रदर्शित किए गए।

अधिग्रहण

इस परियोजना के अन्तर्गत, एक समृद्धि सांस्कृतिक अभिलेखागार निर्मित किया जा रहा है। अभी तक निम्नलिखित सामग्री को अधिग्रहीत किया गया।

* गढ़वाल, अरुणाचल प्रदेश और उड़ीसा से मुखौटा
* केरल और पश्चिम बंगाल से कठपुतलियां
* तमिलनाडु और ओडिशा से पोशाक
* चित्रकला और सूचियां: 34 गोंड चित्रकला, 10 मधुबनी चित्रकला और सूचियां
* पश्चिम बंगाल से चित्रकला
* गढ़वाल से साफा
* गढ़वाल से बैकड्राप
* 1200 फोटाग्राफ
* 187 घंटे का आडियो वीडियो प्रलेखन
* मध्य प्रदेश से 500 गीतों का ऑडियो प्रलेखन

आईजीएनसीए ने देश में लोक और जनजातीय राम कथा परंपरा पर सबसे स्मृद्ध अभिलेखागार एकत्रित किया है। यह परंपरा की विविधता और बहुलता और महाकाव्य के विशाल भौगोलिक दूरियों और जातीय परंपराओं तक उसके गतिमानता को प्रतिबिम्बित करता है।

III लोक देवी मनसा से जुड़े प्रदर्शन और जनश्रुति, संस्कारों का प्रलेखन

प्रलेखन/कार्यशाला/प्रदर्शन

जनपद सम्पदा प्रभाग ने 11वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत बहुस्तरीय पहचान और उनका कला में प्रकटन योजना, के तहत भारत के लोक और जनजातीय देवताओं से जुड़े संस्कार, जनश्रुति, ज्ञान, व्यवस्थाएं और प्रदर्शनकारी परंपराओं के लिए एक परियोजना शुरू किया है। इन देवताओं का संबंधित समुदयों के ऐतिहासिक, सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रक्रियाओं में अंत:स्थापन प्रलेखन के मूल में है।

प्रलेखन

संस्कार, अनुष्ठान, कथाओं, संगीत और मानसा, पश्चिम बंगाल में सांपों की देवी, से जुड़े प्रलेखन को पूर्ण कर लिया गया है।

कार्यशाला

इस परियोजना के अन्तर्गत, असम, बिहार और पश्चिम बंगाल से 3 अनुसंधान सहायक और 10 कलाकार के साथ 15 से 24 फरवरी तक दस दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुआ। विभिन्न राज्यों से मानसा से जुड़े संस्कार, अनुष्ठान, आख्यान, संगीत और प्रदर्शन को समाहित किए हुए एक निर्माण हिंदी में मंच प्रदर्शन में तैयार किया गया।

25 फरवरी, 2008 को ऊपर उल्लिखित राज्यों के कलाकारों ने बहुभाषायी लोक अभिनय मंचित किया।

पूर्वोत्तर अध्ययन कार्यक्रम

परिचय

आईजीएनसीए ने अनुसंधान, प्रलेख, प्रकाशन, प्रोत्साहन, संरक्षण, पुनर्जीवन और सुरक्षोपाय मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक संसाधनों जिसमें क्षेत्र का मानव विरासत शामिल है के लिए भारत के उत्तरी पूर्वी राज्यों में कई गतिविधियों को प्रारंभ किया है। पिछल 10 माहों में केंद्र ने सरकारी कार्यालयों, स्थानीय स्वैच्छिक संगठनों, संस्थाओं, सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों, सामाजिक सक्रिय लोगों, विश्वविद्यालय विभागों, स्थानीय विशेषज्ञों और विद्वानों, राज्य और जिला प्रशासन, स्थानीय पुलिस इत्यादि के सहयोग से गतिविधियों की शृंखला शुरू किया है। स्थानीय लोग आईजीएनसीए की गतिविधियों में भाग ले रहे हैं और सहयोग प्रदान कर रहे हैं। 33 से अधिक जनजातियां प्रलेखित की गई, 1000 पुस्तकें प्राप्त की गई, 1100 वस्तुएं प्राप्त की गई, 250 घंटें श्रव्य-दृश्य प्रलेखन तैयार हैं और नृत्य और गीत के 175 रूप रिकॉर्ड

किए गए। जनजातीय और लोगों के मौखिक इतिहास पुस्तक के रूप में संकलित की जा रही हैं। विभिन्न जनजातीयों और समुदायों के कर्मकांड और त्यौहार को रिकॉर्ड और प्रलेखित किया गया। दुर्लभ पुस्तकों और पांडुलिपियों को अंकीकृत और संरक्षित किए गए। संरक्षण और सुरक्षा के देशज तरीके रिकॉर्ड किए गए। ये लोकप्रिय बनाए गए और उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन संरक्षण और सुरक्षा के आधुनिक तकनीक के आगे-पीछे किया गया। प्रचलित कानूनों का प्रलेखन किया गया। असुरक्षित और सुरक्षित पुरातात्विक और विरासत के स्थलों को प्रलेखित किया गया। लोक देवताओं के आकृति और भौतिक सीमाओं से श्रेष्ठ बनाने के लिए मानसिक मानचित्र उत्पन्न करने के लिए वृतांत को पुन:तैयार करने के प्रयास किए गए। कुछ महत्वपूर्ण गतिविधि और उनक गतिविधियां निम्नलिखित हैं:

प्रमुख उद्देश्य

1. उनके साथ प्रलेखन और संरक्षण के कार्यक्रम के प्रारंभ करने के लक्ष्य के साथ सरकारी और निजी क्षेत्र के संग्रहालय के साथ कार्यशाला, बैठक और सेमीनार आयोजित किए गए।

2. इतिहास, विरासत, संस्कृति, कला, जिसमें संगीत और वास्तुकला भी शामिल है और महिलाओं और नामघर परंपराओं द्वारा प्रबंधित सत्र, कलासत्र पर प्रदर्शनी पर विचार-विमर्श करने के लिए तथा सत्रधिकारी के साथ कार्य करने के लिए।

3. जनजातीय और लोक समुदाय के कलाकारों और शिल्पकारों के साथ उनके वस्त्र, शिल्प और नृजातीय वस्तुएं परिवार और समुदाय की परंपराओं, बड़े बुजुर्ग लोगों के द्वारा उपलब्ध कराए गए ऐतिहासिक विवरण के साथ, जिन्हें अर्जित किया जा सकता हो, आदान-प्रदान।

4. पारंपरिक कानून, विवाद प्रस्ताव और समाधान, इन संस्थाओं द्वारा अपनाये गये मानव तथा प्राकृतिक प्रबंधन रणनीति पर विभिन्न स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ बहस और कार्यशालाएं।

5. उत्तर पूर्वी भारत के विश्वविद्यालयों के समाज विज्ञान विभागों के विद्वानों जिसमें संबंधित क्षेत्र के प्रदर्शक, ज्ञानवान लोग और विशेषज्ञ भी शामिल हैं, के साथ बैठक।

6. उनके सभी संभव पहलुओं और उनके योगदान के साथ महिलाओं के प्रतिनिधियों के साथा कार्यशालाएं और मिलन, ताकि उनके परिप्रेक्ष्य से इतिहास लिखा जा सके।

7. जैव-सांस्कृतिक और जैव सांस्कृतिक सहिष्णुता को बरकरार रखने वाले सांस्कृतिक प्रथाओं को समझना।

8. उत्तर पूर्व भारत के विभिन्न मठों के लामाओं और ननों के दृष्टिकोंण और प्राथमिकता के क्षेत्रों को जानने के लिए उनके साथ बैठक करना। प्रशिक्षण, प्रलेखन और संरक्षण के कार्यक्रमों की शुरुआत के लिए मठों, उनके संग्रहालय, पुस्तकालयों, सामग्रियों, वास्तुशिल्प, कला, कला संबंधी ज्ञान इत्यादि की स्थिति का मूल्यांकन भी करना।

9. संस्कृति और संरक्षण, प्रोन्नत और सांस्कृतिक विरासतों के लिए उनके हस्तक्षेप पर लोगों के विचारों को जानना।

10. संस्थाएं और व्यक्ति, जिन्होंने विस्तार पूर्वक आडियो-विजुअल प्रलेखन किया है, के साथ संवाद शुरू करना, ताकि आईजीएनसीए ऐसी संस्थाओं (और वैयक्तिक) परिसंपत्तियों और उत्पाद के हिस्सों को उनके साथ अंकीकरण किया जा सके।

11. अधिकारियों और व्यक्तियों की सलाह के साथ विकास में संघटनात्मक तत्व की प्रशंसा करने और संस्कृति के विकास के लिए उत्तरी पूर्वी भारत के राज्यों की सरकारों के साथ अतिरिक्त सहयोगात्मक गतिविधियों का अन्वेषण।

12. उत्तरपूर्व भारत के संरक्षित और गैर संरक्षित पुरातत्विक विरासत स्थलों का आडिया-विजुअल प्रलेखन (डिजिटल)।

13. उत्तरपूर्व भारत के खेलों और जनजातीय और लोक खेलों का पुनरुद्धार और प्रलेखन।

14. पांडुलिपियों, दुर्लभ पुस्तकों और पाठ संसाधनों का सर्वेक्षण, प्रलेखन, अनुसंधान और अंकीकरण।

15. पांडुलिपियों, वस्तुओं या किसी भी रूप में शिल्पतथ्यों के संरक्षण और संरक्षण के देशज और परंपरागत तरीकों तक पहुंच और सीखने तथा पुनरुद्धार के लिए क्षमता निर्माण कार्यशालाओं का आयोजन।

16. पुल, नष्ट हो रहे, लिंग उन्मुख और सांस्कृतिक शब्दों के शब्द संग्रह (ग्लॉसरीज) तैयार करने के लिए उत्तर पूर्व के जनजातियों और समुदायों के ज्ञानवान व्यक्तियों, सामुदायिक नेताओं, बड़े-बुजुर्ग लोगों का कार्यशाला और बैठक आयोजित करना।

17. आईजीएनसीए वेबसाइट (www.ignca.gov.in) के माध्यम से उपर्युक्त डेटा तक लोगों की पहुंच कायम करना।

आईजीएनसीए ने भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों पर व्यापक रणनीति को चिह्नित करने के लिए 19-20 अप्रैल, 2007 को नई दिल्ली में मस्तिष्क को झकझोरने वाला दो दिवसीय सत्र आयोजित किया।

असम

असम, उत्तर पूर्व के लोक समुदायों और सभी जनजातीय समुदायों का लगभग प्रतिनिधिमूलक राज्य है। सांस्कृतिक रूप से असम ब्रह्मपुत्र घाटी (ऊपरी असम, निचला असम और केंद्रीय असम), बराक घाटी और उत्तरी कछार की पहाड़ियों में विभाजित है। बराक घाटी, ब्रह्मपुत्र घाटी की अपेक्षा छोटी और एक दलदली मैदान और उसके बीच में नीची पहाड़ियां हैं।

व्यापक गतिविधियां, जिसमें सेमीनार, कार्यशालाएं और बैठकें सम्मिलित हैं, असम के सभी विस्तृत जैव-संस्कृति पॉकेट में आयोजित किए गए।

श्रीमंत शंकर देव कलाक्षेत्र और विभिन्न जिलों के जिला प्रशासन के सहयोग से, आईजीएनसीए ने 'कम्युनिटी-वाइज कस्टमरी लॉज'; 'फाल्क डीटीज, दीयर मार्फोलॉजिकल फीचर एसोसिएशेटेड विद मिथ्स एंड लीजेंड्स आफ असम'; 'वूमेन्स पार्टीसिपेशन इन डेवलॅपमेन्ट आफ असमीज एंड ट्राइबल लाइफ स्टाइल'; 'ओरल हिस्ट्री आफ द एल्डर्स' और 'ग्लोसरी आफ लोकल वैनिशिंग टर्म्स अवलेवल इन वेरियस रीजनल लैंग्यूजेज' पर कार्यशालाओं की एकश्रृंखला का आयोजन सफलतापूर्वक किया। राज्य में सत्र परंपरा के आवश्यक तत्व के अनुसंधान और पुनर्शक्ति के लिए सत्र पर केंद्र ने संसाधन व्यक्तियों का एक दिनभर का बैठक आयोजित किया। इसने संग्रहालय विशेषज्ञों और विरासत के पेशेवर लोगों का भी बैठक बुलाया। देशज ज्ञान व्यवस्था पर आदान-प्रदान बैठक: में तेजपुर केंद्रीय विश्व विद्यालय के सहयोग से सांस्कृतिक अध्ययन विभाग में विशेषज्ञों की बैठक, विद्वानों और परंपराधारी, असम के बंधुआ चायबागानकर्मी और अन्य कलाकारों ने भाग लिया और आईजीएनसीए के प्रयासों में अपनी भागीदारी की इच्छा व्यक्त किया। तेजपुर, गुवाहाटी, एन. सी. हिल्स (हाफलांग), ऊपरी असम (तिनसुखिया), बराक घाटी (सिलचर) और निचले असम (बोगाईगांव) में इन गतिविधियों और नये प्रयासों का आयोजन किया गया। इन सांस्कृतिक पाकेट के लगभग सभी बड़ी जनजातीय समुदायों कार्यशाला में भाग लिया और महत्वपूर्णरूप से योगदान दिया। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग में 6 जून, 2007 को 'रिसर्च पर्सपेक्टिव इन नार्थ ईस्ट इंडिया' पर एक दिन का बैठक आयाजित किया गया। 100 से अधिक विद्वानों, अनुसंधानकर्ताओं, युवा वैज्ञानिकों और विश्वविद्यालय के फैकल्टी ने भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किए और अपनी दृष्टि को बांटा। बैठक की अध्यक्षता सदस्य सचिव, आईजीएनसीए, डा. के. के. चक्रवर्ती ने की। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के कुलपति मुख्य अतिथि थे। बैठक में अनुसंधान के नये परिप्रेक्ष्य और नये विचारों का पहचान किया गया।

आईजीएनसीए के वेबसाइट हेतु असम के सांस्कृतिक विरासत और पुरातात्विक स्थलों का प्रलेखन किया गया है। असम में 643 से अधिक सत्र हैं। केंद्र ने श्रीमंत शंकर देव कलाक्षेत्र

के सहयोग से, उन सभी में विस्तृत आडियो-विजुअल प्रलेखन और अनुसंधान गतिविधियों को शुरू किया है। ये सभी गतिविधियां जिला प्रशासन, उत्तरी कछार स्वायत्त परिषद, बोडोलैंड स्वायत्त परिषद, महिलाओं के संगठन, सत्र संस्थाओं, इत्यादि सहयोग से संपन्न हुई।

मणिपुर

मणिपुर, उत्तरीपूर्व भारत के सांस्कृतिक रूप से संपन्न और गतिशील राज्यों में से एक है। कला और संस्कृति विभाग, मणिपुर सरकार; मणिपर फिल्म विकास निगम (एमएफडीसी); जनजातीय अनुसंधान संस्थान; राज्य पुरातत्व; कला और संस्कृति निदेशालय; मणिपुर केंद्रीय विश्वविद्यालय; राज्य संग्रहालय; मुतुआ बहादुर संग्रहालय; कॉम सांस्कृतिक समाज; मणिपुर वोमेन्स समाज और कुछ व्यक्तिगत कलाकारों, पेशेवरों, विद्वानों के सहयोग से केंद्र ने गतिविधियो की एक श्रृंखला प्रारंभ किया। चूड़ाचांदपुर जिले के खोइरांतक गांव के कॉम सांस्कृतिक समाज के सहयोग से कॉम जनजाति के 34 नृत्य रूपों और लोक गीतों का प्रलेखन किया गया। दुर्लभ कॉम नृजातीय सामग्रियों और कपड़ों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। एमएफडीसी के सहयोग से मणिपुर के पुरातात्विक और विरासत स्थलों पर एक वीडियो डॉक्यूमेंट्री और विस्तृत फोटोग्राफ तैयार किए गए।

33 से अधिक जनजातीय समुदाय, मणिपुर के विभिन्न सांस्कृतिक और भोगोलिक पॉकेट में निवास कर रही हैं। आईजीएनसीए ने नृजातीय सामग्रियों को प्राप्त किया है, राज्य में जनजातीय साफ परंपरा और, दुर्लभ मेलों और त्यौहारों में से कुछ का प्रलेखन किया है।

लोकटक झील उत्तर पूर्व में सबसे बड़ी झील है। यह मणिपुर के लोगों के मानसिक स्मृति और सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास से जुड़ा हुआ है। केंद्र ने लोगों के संस्कृति और जीवन में इसके महत्व पर दो दिवसीय सेमीनार आयोजित किया और एक मनोरंजक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म तैयार किया। राज्य संग्रहालय, इम्फाल में मणिपुर के संग्रहालय पेशेवरों और संग्रहालयविदों एक दिनभर का बैठक आयोजित किया गया। समुदाय संग्रहालय के लिए कार्ययोजना तैयार करने और राज्य के आम पुरुष और महिला में मूर्त और अमूर्त विरासत के विशेषता के संरक्षण पर उत्साही जागरूकता का एक प्रयास था। राज्य में लोक खेलों के विभिन्न रूप हैं। यह दुखद है कि उसमें से कई मर रहे हैं। केंद्र ने जनजातीय अनुसंधान संगठन के सहयोग से, इन लोक खेलों के स्थानीय और सांस्कृतिक महत्व के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए प्रयास किया। राज्य के 19 जनजातियों के लोक खेलों को सावधानी पूर्वक प्रखेलित किया गया और इस विषय पर एक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनाया गया।

महिलाओं के संगठन और मणिपुर केंद्रीय विश्वविद्यालय के सहयोग से मणिपुर के मैइतेइ महिलाओं के योगदान को समझने के लिए माइबिस ऑर द फीमेल प्रीस्टेसेस आफ द स्टेट

विषय पर दिन भर का कार्यशाला इम्फाल में आयोजित किया गया। मार्शल खेलों के माध्यम से सहिष्णुता के परतों को समझने का प्रयास किया गया। जनजातीय समुदायों, ग्रामीण समुदायों और लोगों के अन्य समूहों से सांस्कारिक और नृजातीय सामग्रियों को, राज्य की संस्कृति को दिल्ली और भारत के अन्य भाग में प्रकाशित करने अर्जित किया गया। मणिपुर के महिला शिल्पकारों की रचनात्मकता और मेमोरीज आफ एल्डर्स पर प्रलेखन कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। महिला कलाकारों के उत्पादों के लिए बाजार और रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए एक प्लेटफार्म तैयार किया गया।

क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध स्थानीय, नष्ट होने वाले, और पुल शब्दावली की विस्तृत ग्लासरी तैयार करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। स्थानीय चित्रकारों ने देवताओं और आख्यानों के अन्य चरित्रों और आम लोगों के जनश्रुतियों की आकृतिमूलक विशेषताएं निर्मित करने का प्रयास किया। इम्फाल में मणिपुर के कला और शिल्प पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रकृति और संस्कृति राज्य के लोक जीवन में एक दूसरे से बहुत ही निकट से जुड़े हुए हैं। स्थानीय लोग बहुत से रोगों के निदान के लिए औषधिक वनस्पतियों को जानते हैं। मानव ज्ञान के इस परत को समझने के लिए, केंद्र ने मेडिसिनल प्लांट्स एंड ट्रेडिशनल हीलिंग प्रैक्टिसेस पर एक कार्यशाला आयोजित किया। पुराने दिनों में, राज्य के कुछ समुदाय चट्टानी पहाड़ियों के कुओं से देशज नमक तैयार किया करते थे। इसका एक महान सांस्कृतिक महत्व था। जहां तक वर्तमान में कुछ ही घर नमक बनाने के परंपरागत तरीकों का उपयोग करते हैं। इस नमक की सांस्कारिक पूजा, जन्म और मृत्यु, कर्मकांड इत्यादि में आवश्यकता होती है। देशज नमक औषधीय गुणों से भरा होता है। इसके इतिहास, बाजारी क्षमता और सांस्कृतिक उत्तरजीविता और पुनर्वापसी को समझने के लिए, मणिपुर केंद्रीय विश्वविद्यालय के सहयोग से निन्जेल गांव में एक कार्यशाला-कम-सेमीनार आयोजित किया गया।

अन्य गतिविधियों में शामिल हैं: ट्रेडिशनल टॉय मेकिंग पर कार्यशला; द फेस्टिवल आफ रोंगमेई ट्राइब्स का प्रलेखन; रिचुअलस्टिक प्रैक्टिस इन लाइ हरोबा आफ मणिपुर पर कार्यशाला; द ट्राइबल आर्ट आफ मणिपुर विद रिफरेंस टू स्टोन एंड वुड कार्विंग्स पर कार्यशाला; 'यूनिटी एंड इंटीग्रेशन थ्रू मार्शल आर्ट्स' विषय पर मणिपुर के जातीय समुदायों के प्रलेखन और पांच दिवसीय कार्यशाला।

सिक्किम

सिक्किम का छोटा हिमालयी राज्य संस्कृति और प्राकृतिक विविधता में बहुत संपन्न है। राज्य की 11 मान्यता प्राप्त भाषाएं हैं। राज्य अपने संपन्न जैव सांस्कृतिक विविधता, जनजातीय

पहचान, बौद्ध मठों, नेपाली संस्कृति, लेप्चा मिथकों, भूटिया उत्प्रवास और सांस्कृतिक सहक्रिया के लिए जाना जाता है।

सिक्किम सरकार के सांस्कृतिक मामलों और विरासत विभाग के सहयोग से, ट्रेडिशनल हीलर्स आफ सिक्किम इनक्लूडिंग आल ट्राइब्स, कास्ट्स, एंड कम्युनिटीज पर 4 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दक्षिणी सिक्किम के जिला मुख्यालय जोरथांग में किया गया। 512 परंपरागत चिकित्सकों ने कार्यशाला में भाग लिया और आम दर्शकों के साथ तथा संस्कृति के विशेषज्ञ और विद्वानों में अपने ज्ञान को बांटा। केंद्र ने सिक्किम सरकार के भागीदार के रूप में इंटरनेशनल फ्लावर फेस्टिवल आफ सिक्किम को प्रलेखित किया। कलाकारों के पदर्शन को उचित रूप से रिकार्ड और प्रलेखित किया गया। सिक्किम समुदाय के नृजातीय सामग्री के 121 आइटम आईजीएनसीए के उत्तर पूर्व कोनें में प्रदर्शित करने के लिए प्राप्त किए गए। सरकारी कर्मियों, स्थानीय विद्वानों, चिकित्सकों, लोक कलाकार, बड़े-बुजुर्ग और सामाजिक उत्साही की सलाह से भविष्य की गतिविधि का एक ढांचे को अंतिम रूप दिया गया।

अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश 26 बड़ी जनजातीय समुदायो का निवास है- जिसमें से सभी अपने विशिष्ट सांस्कृतिक और भौगोलिक पहचान के लिए जाने जाते हैं। कला और संस्कृति विभाग, अरुणाचल प्रदेश सरकार; तवांग मोन्स्टरी; बोमीडिला के ऊपरी गुंपा और निम्न गुंपा (मोन्स्टरीज); लोहित जिले के पाली विद्यापीठ ; ईदू-मिशमी लिटरैरी एंड कल्चर सोसाइटी, देबांग घाटी; और राजीव गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, ईटानगर के सहयोग से आईजीएनसीए ने अपनी गतिविधियां संपन्न की हैं। राज्य की 7 बड़ी जनजातियों के जीवन शैली को प्रलेखित किया गया। 'कंजरवेशन आफ ट्रेडिशनल एंड डॉक्यूमेंटेशन आफ इंडीजीनश टेक्नीक्स आफ प्रिजर्वेशन' पर तवांग मोन्स्टरी के सहयोग से 6 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन तवांग मोन्स्टरी, तवांग में किया गया। केंद्र ने स्थानीय विद्वानों और योजनाकारों के सोचने और संस्कति के माध्यम से विकास के लिए कार्य करने के लिए एक प्लेटफार्म तैयार किया है। इसी प्रकार, राजीव गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के सहयोग से ईटानगर में 'डॉक्यूमेंटेशन, डिससेमिनेशन, रिजनरेशन आफ वैनिशिंग नालेज सिस्टम एंड हेरीटेज एलीमेंट्स आफ द ट्राइबल पीपुल आफ अरुणाचल प्रदेश' पर आधारित विशेषज्ञ, विद्वान और देशज ज्ञान के लोगों का एक दिवसीय बैठक आयोजित किया गया। पर्यटन और सांस्कृतिक मामलों के मंत्रालय, अरुणाचल प्रदेश सरकार, ईटानगर के अंतर्गत अनुसंधान निदेशालय के सहयोग से अरुणाचल प्रदेश के संग्रहालय विशेषज्ञों और संसाधन व्यक्तियों के साथ एक बैठक आयोजित किया गया।

आईजीएनसीए टीम राज्य के निम्न देबांग घाटी के ईदू मिशमी की विरासत को प्रकाशित करने की कोशिश कर रही है। जिला अनुसंधान अधिकारी, देबांग घाटी के सहयोग से इसने हीलिंग प्रैक्टिसेस पर कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में ईदू-मिशमी के रोइंग के आस-पास के गांवों में रहने वाले 35 परंपरागत चिकित्सकों ने भाग लिया। स्थानीय संसाधन व्यक्तियों के सहयोग से, उनके ज्ञानों का प्रलेखन, दवाइयों की तैयारी, घटक, क्या करो और क्या न करो, जोड़ने वाले शब्द और कहावतों को कवर किया गया। आईजीएनसीए ने कस्टमर लॉ पर एल्डर्स बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में लगभग 40 लोगों ने भाग लिया और अपने पारंपरिक विधियों पर केस स्टडी और उद्धरणों के साथ चर्चा किया। पारंपरिक विधियों से संबंधित विशेष शब्दावली, संस्कार, व्यवहार इत्यादि प्रलेखित किए गए। आईजीएनसीए टीम ने ईदू मिशमी समुदाय के समारोह पूर्वक शिकार का विस्तृत रूप से आडिया-विजुअल प्रलेखन किया।

अरुणाचल प्रदेश का लोहित जिला थेरवाद बौद्ध धर्म के प्रभुत्व के लिए जाना जाता है। जिला अनुसंधान अधिकारी के सहयोग से नामसी और चौखाम में खाम्प्टी समुदाय के पो-पी महोत्सव (नया वर्ष) पर एक कार्यशाला आयोजित किया गया और प्रलेखन किया गया। चौखाम में खाम्प्टी के सांस्कारिक प्रथाओं और धर्म, संस्कृति पर कार्यशाला और चौखाम में खाम्प्टी के साहित्य और भाषा पर भी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

त्रिपुरा

संस्कृति विभाग, त्रिपुरा सरकार, त्रिपुरा कला महाविद्यालय, अगरतला, त्रिपुरा विश्वविद्यालय के साथ मिलकर आईजीएनसीए ने राज्य की भावी योजनाओं की रूपरेखा तैयार की है। वित्तीय वर्ष 2007-2008 में इसने गंगा, गोमती और ब्रह्मपुत्र उत्सवों का एक सामूहिक उत्सव का आयोजन किया था। यह उत्सव बंगाल, त्रिपुरा और उत्तर-पूर्व के राज्यों के लोगों में सौहार्द्र सृजनता हेतु एक प्रयास है। आईजीएनसीए के दल ने त्रिपुरा की जनजातियों और समुदायों की जीवनशैली के व्यापक दृश्य-श्रव्य दस्तावेज भी तैयार किए हैं।

नागालैंड

कला एवं संस्कृति विभाग, नागालैंड, एन्थरोपोलोजिकल सोसायटी व श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, असम के साथ मिलकर आईजीएनसीए ने व्यापक दृश्य-श्रव्य दस्तावेज तैयार किए जिसमें लोक कलाकारों के साक्षात्कार एवं परंपराओं के प्रतिपालकों को शामिल किया गया था। इसमें कोहिमा में आयोजित हार्नबिल उत्सव के दौरान नागालैंड की समस्त 16 जनजातियों

के नृत्य-संगीत-लोक खेलकूद के दस्तावेज शामिल किए गए थे। राज्य की स्थानीय जनता ओर नवयुवक बुद्धिजीवियों की भागीदारी इस प्रयास की सबसे उल्लेखनीय विशेषता रही।

मेघालय

यह केंद्र कला एवं सस्कृति विभाग, मेघालय सरकार, नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग, राज्य प्रशासन, तूरा व शिलांग, राजकीय संग्रहालय, मेघालय, जोनल एवं रीज़नल सेंटर ऑफ एन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के साथ मिलकर मेघालय में अपनी गतिविधियों को संचालित करने की योजना बना रहा है। वित्तीय वर्ष 2007-08 में राज्य की दो प्रमुख जनजाति गारो और खासी की दृश्य एवं अदृश्य विरासत को शामिल करने के प्रयास भी किए गए। इस केंद्र ने तूरा में मेघालय की कला व हस्तकला पर एक कार्यशाला के अतिरिक्त गारो और खासी जनजातियों में प्रचलित औषधीय पौधों और पारंपरिक उपचार पद्धतियों पर भी एक कार्यशाला आयोजित की गयी। इसके अलावा री-भोई जिले में पौधों से रेशे प्राप्त कर वस्त्र बनाने की पारंपरिक विधियों पर कार्यशाला आयोजित की गई। इस केंद्र ने मौखिक इतिहास पर वृद्धों की एक सभा का आयोजन किया तथा खासी जनजाति के परंपरागत वाद्य यंत्रों के निर्माण पर कार्यशाला आयोजित की। इसके अतिरिक्त असानांग गांव में 100 ड्रम वांग्ला उत्सव के दृश्य-श्रव्य दस्तावेज और स्मिथ विलेज में शाद नोंगक्रेम उत्सव के दृश्य-श्रव्य दस्तावेज तैयार किए।

मिज़ोरम

मिज़ोरम विश्वविद्यालय के इतिहास एवं वाणिज्य संकाय के परामर्श से लोकनृत्य विभाग ने वित्तीय वर्ष 2007-08 में शामिल किए जाने वाले विषयों को प्राथमिकता प्रदान कर दी दिया है।

सामूहिक गतिविधियां

स्थानीय जनता, विशेषज्ञों एवं बुद्धिजीवियों के दृष्टिकोण को समझने के लिए दिल्ली और गुवाहाटी में दो कार्यशालाएं आयोजित की गई। दिल्ली में आयोजित पहली कार्यशाला में उत्तर-पूर्वी राज्यों के पेशेवर, बुद्धिजीवी, योजनाकार, प्रशासकों, छात्रों एवं कलाकारों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियां दिखाई और लोगों की सांस्कृतिक विरासत को समझने की शोध परियोजनाएं के नवीन रुख और नए आयाम सुझाए। प्रत्येक राज्य के लिए अनंतिम कार्य योजना बनाने के लिए गुवाहाटी में सिक्किम सहित उत्तर-पूर्व के समस्त राज्यों से सूचनापरक व्यक्तियों की दिनभर परामर्शी सभा आयोजित की गई।

कलादर्शन

कलादर्शन प्रभाग आईजीएनसीए के विभिन्न प्रभागों के कार्यकलापों के प्रस्तुतीकरण एवं नानाविध कलाओं के बीच सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से प्रभाग ने अभिव्यक्ति और प्रस्तुति की एक अतुलनीय शैली विकसित की है। यह प्रदर्शनियों, सेमीनारो, संगोष्ठियों एवं व्याख्यानों का आयोजन करता है।

प्रदर्शनियां

निम्नलिखित प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया:

भारत सरकार और हंगरी सरकार के बीच हस्ताक्षरित सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के भाग के रूप में, इतालवी सांस्कृतिक संस्थान- हंगेरियाई सूचना और सांस्कृतिक केंद्र और यूरोपीय आयोग के प्रतिनिधिमंडल के सहयोग से ब्रन्नर्स की 'ड्रीम्स इन इटली' नामक चित्रकला की प्रदर्शनी आयोजित की गई।

प्रदर्शनी माता-पुत्री दोनों उनके भारत के मार्ग में संग्रह से ली गई थी। प्रदर्शनी का 12 जून, 2007 को उद्घाटन करते हुए, माननीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्रीमती अंबिका सोनी ने कहा कि प्रदर्शनी वैश्विक सौंदर्य कल्पना पर भारतीयों के प्रयास के प्रभाव और दुनिया भर के कलाकारों से इसे मिले प्रेम तथा सम्मान को दिखाने में बहुत आगे तक गया। इस अवसर पर बहुत से विदेशी गणमान्य जिसमें इटली और हंगरी के राजदूत, और यूरोपीय आयोग के डिप्टी चीफ शामिल थे, भी उपस्थित थे। प्रदर्शनी दर्शकों के लिए 23 जून, 2007 तक लगी रही।

सदस्य सचिव, आईजीएनसीए और इतालवी सांस्कृतिक संस्थान के निदेशकों और हंगेरियाई सूचना और सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक के आलेख के साथ-साथ एलिजाबेथ ब्रन्नर और एलिजाबेथ सैस ब्रन्नर के डायरियों और जीवनियों के उद्धरण के साथ प्रदर्शनी पर एक तालिका मुद्रित किया गया। तालिका में माता और पुत्री दोनों के चित्रों के 79 निदर्शन भी सम्मिलित हैं।

2. आदिवासी दिवस का उत्सव:

आदिवासी दिवस को मनाने के लिए दिल्ली में 12 अगस्त, 2007 को 1500 जनजातीय लोग इकट्ठे हुए। उन्होंने अपने परंपरागत पोशाक में नाचा और गाया। विभिन्न जनजातियों के लोगों के आत्मविश्वास को बढ़ाने, संस्कृति और कला में उनके योगदान को मान्यता देने, और उन्हें उनके जीवन से संबंधित मुद्दों पर बहस करने के लिए मंच

उपलब्ध कराने हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम आईजीएनसीए के समर्थन के साथ देशज जनजातीय लोगों के भारतीय परिसंघ द्वारा आयोजित किया गया।

3. 9 से 12 जनवरी, 2008 तक रोमाज और उनके भारत से सांस्कृतिक संबंध को प्रकाशित करते हुए 'भारतीय डाइस्पोरा' पर एक इवेंट्स का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी, फिल्म शो, पारस्परिक प्रस्तुतियां और करतब तथा पुस्तक जारी करके इवेंट्स को अंकित किया।

4. डाइस्पोरा परियोजना के तहत स्पिक मैके के सहयोग के साथ आईआईटी दिल्ली, टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, वसंत विहार और मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय में 13 और 14 अगस्त, 2007 को फ्रांसीसी रि-यूनियन प्रायद्वीप के जिस्काकन बैंड द्वारा प्रदर्शन किया गया। 19वीं शताब्दी में फ्रांसीसी रियूनियन द्वीप को भारतीय वंशज के पांचवीं पीढ़ी के बंधुआ उत्प्रवासी गिल्बर्ट पौनिया द्वारा स्थापित जिस्काकन बैंड फ्रासीसी भारतीय डाइस्पोरा एक संगीत बैंड है। जिस्काकन संगीत भारत, अफ्रीकी, चीनी और यूरोपीय मूल के मिश्रित प्रजाति के लोगों के सांस्कृतिक दिलचस्पी का प्रतिबिंबन है।

5. एक प्रदर्शनी 'विंडो टू आइबेरियन पपेटरी' का उद्घाटन भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सचिव अभिजित सेनगुप्ता द्वारा 31 जनवरी, 2008 को किया गया। सोसाइदाद एस्तातल पारा ला अक्किआन कल्चरर एक्सटेरियर (एसईएसीईएक्स), सेन्ट्रो डि इनीशिएटिव्स दा तोलोसा (सी. आई. टी), स्पेन और इशारा पपेट थिएटर ट्रस्ट, दिल्ली के सहयोग से आयोजित यह प्रदर्शनी 26 फरवरी, 2008 तक दर्शकों के लिए खुला रहा। आबेरियन प्रायद्वीप के कठपुतलियों की विशिष्ट प्रदर्शनी के संपूरक के रूप में एक फर्टाइल अर्थ शीर्षक से जोआं बाएक्सास द्वारा अभिनय उद्घाटन की विशिष्टता था।

6. ग्लिम्पसेस आफ प्रिस्टाइन इंडिया- आईजीएनसीए संदर्भ पुस्तकालय के दुर्लभ पुस्तक संग्रह से निदर्शन 11 से 18 फरवरी, 2008 तक आयोजित हुआ।

7. इनक्रेडिबल इंडिया / 60: 23से 27 सितम्बर, 2007 के दौरान महोत्सव में प्रदर्शनी के लिए आइजीएनसीए अभिलेखागार से एक प्रदर्शन 'रूपा-प्रतिरूप-फेस टू इंटरफेस इंडियन मास्क्स' लिंकन सेंटर, न्यूयार्क भेजा गया। यह उद्घाटन कार्यक्रम का दृश्य विशिष्टता था।

8. विगनेट्स आफ काश्मीरी लाइफ एंड कल्चर: (19वीं से प्रारंभिक 20वीं शताब्दी) 29 फरवरी से 4 मार्च, 2008 तक आईजीएनसीए के दुर्लभ पुस्तक संग्रह से फोटोग्राफ

दिखाए गए। श्री सुभाष पंडित और भारत भूषण द्वारा काश्मीर की लोकप्रिय देवी पर केंद्रित एक फिल्म राज्ञा और सारिका देवी उद्घाटन में दिखाया गया।

9. लोकपरंपरा और विभिन्न समुदायों के अध्ययन में एक कदम आगे बढ़ाते हुए, एक प्रदर्शनी, सिलिब्रेटिंग द आर्ट एंड क्राफ्ट आफ ट्राइबल पीपुल आफ ईस्टर्न एंड सेंट्रल इंडिया, देशज जनजातीय लोगों के भारतीय परिसंघ के सहयोग से आयोजित किया गया। बाहा फेस्टिवल पर सेमीनार और प्रदर्शन से प्रदर्शनी को संपूरित किया गया। प्रदर्शनी 19 मई, 2007 तक दर्शकों के लिए उपलब्ध रहा।

10. दिल्ली की मुख्यमंत्री माननीया श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा 16 जुलाई, 2007 को श्री मोजी रिबा और श्री केशव चंद्र द्वारा अरुणाचल प्रदेश पर फोटोग्राफ के सम्मिलित किए हुए 'मिस्ट फ्राम द माउंटेंस' शीर्षक का एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। यह अरुणाचल प्रदेश के भूमि, लोग, जीवनशैली, आवास, कृषि, पशु, पौधे, धर्म और कर्मकांड का प्रदर्शनमंजूषा था। प्रदर्शनी में माननीय श्री एस के सिंह, अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल, श्री एस के सिंह और डा. कपिला वात्स्यायन, सांसद (राज्यसभा) और कई गणमान्य व्यक्तियों ने प्रदर्शनी का निरीक्षण किया, जो 24 जुलाई, 2007 तक दर्शकों के लिए खुला रहा।

11. आईजीएनसीए के सहयोग से चीनी दूतावास द्वारा एक प्रदर्शनी, 'चाइनीज पीपुल्स लाइफ थ्रो लेंस' का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन 26 जुलाई, 2007 को श्री एम. वी. राजशेखरन, योजना राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा किया गया। यह प्रदर्शनी 3 अगस्त, 2007 तक दिखाया गया। एमईए के अनुमति के साथ, आईजीएनसीए अंतरसांस्कृतिक नेटर्वक को विस्तृत करने और संस्कृति तथा कला एवं बदलती जीवन शैली के क्षेत्रों की तुलना के लिए प्रदर्शनी के प्रदर्शन हेतु समर्थन दिया और प्रदर्शनी के जगह को उपलब्ध कराया।

12. 'भारत इन रिफलेक्शन'- थाईलैंड की हर रॉयल हाइनेस राजकुमारी महा चक्री सिरिधार्न द्वारा 9 अगस्त, 2007 को फोटोग्राफ की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। श्री चिन्मय आर. गरेखान, अध्ययक्ष, आईजीएनसीए, डा. कर्ण सिंह, अध्ययक्ष, आईसीसीआर, थाईलैंड के राजदूत और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रदर्शनी 15 अगस्त, 2007 तक दर्शकों के लिए खुला रहा। यह कार्यक्रम भारत-थाई कूटनीतिक संबंधों के 26वें वर्ष के उपलक्ष्य में इवेंट्स का भाग था।

13. भारत-वियतनाम कूटनीतिक संबंधों के 60वें वर्ष के अवसर पर फोटाग्राफ, परंपरागत पोशाक और आभूषण का 'वियतनाम टुडे' शीर्षक से एक प्रदर्शनी भारतीय सांस्कृतिक

संबंध परिषद और वियतनाम के समाजवादी गणराज्य के सहयोग से आयोजित किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री चिन्मय आर. गरेखान, अध्ययक्ष, आईजीएनसीए, द्वारा 17 सितम्बर, 2007 को किया गया। यह प्रदर्शनी 24 सितम्बर, 2007 तक दर्शकों के लिए खुला रहा। आईजीएनसीए ने प्रदर्शनी से अपने अभिलेखागार के लिए प्रदर्शन प्राप्त किया।

15. यूरोपीय संघ के सांस्कृतिक सप्ताह 2007 के अवसर पर आईजीएनसीए के माटीघर में यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल द्वारा 'यूनाइटेड इन डाईवरसिटी' शीर्षक से 22 नवंबर से 2 दिसम्बर, 2007 तक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

आदि दृश्य और आदि श्रव्य के अंतर्गत कार्यक्रम:

13 दिसम्बर माह में, आईजीएनसीए ने दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला महोत्सव के भाग के रूप में दो कार्यक्रमों का आयोजन किया। विजुअल आर्ट्स पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटन 17 दिसंबर, 2007 को श्रीमती शीला दीक्षित, माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली द्वारा आईजीएनसीए के माटीघर, सीवी मेस, जनपथ, नई दिल्ली में किया गया और यह 23 दिसम्बर, 2007 तक दर्शकों के लिए खुला रहा। यह प्रदर्शनी डीआईएएफ और ओसियान, जिसने संग्रह को प्रदर्शन के लिए ऋण दिया, सहयोग से आयोजित किया गया।

21 से 23 दिसम्बर, 2007 तक आईजीएनसीए के लॉन पर मार्निंग रागा का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिष्ठित शास्त्रीय गायकों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

1) स्मारकीय व्याख्यान

आचार्य हजारी प्रसाद मेमोरियल लेक्चर: आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से एक पैनल परिसंवाद 19 अगस्त, 2007 को आयोजित किया गया। डा. विश्वनाथ त्रिपाठी, श्री नित्यानंद तिवारी और श्री राजनारायण बिसारिया संवादकर्ता थे। डा. नामवर सिंह ने परिसंवाद की अध्यक्षता की। श्री चिन्मय आर. गरेखान, अध्ययक्ष, आईजीएनसीए ने विचार-विमर्श की अध्यक्षता की, जबकि अन्य गणमान्य/विद्वान और प्रेस के सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

2) सार्वजनिक व्याख्यान

1. भारतीय डाइस्पोरा पर एक आदान-प्रदान सेसन का प्रो. डेविड देबीदीन, अध्ययक्ष, एशियाई डाइस्पोरा स्टडीज प्रोग्राम, यूनिवर्सिटी आफ वारविक, यू.के. के साथ 12 अप्रैल, 2007 को किया गया।

2. त्रिनिदाद की सुश्री नलिनी मोहाबिर द्वारा भारतीय डाइस्पोरा पर उनके अनुसंधान कार्य पर 20 अप्रैल, 2007 को इंडियन डाइस्पोरा पर एक व्याख्यान दिया गया।

3. 3 मई, 2007 को डा. आबिद हुसैन द्वारा दिए गए व्याख्यान का टॉपिक दायसाकू इकेडा: बिल्डिंग ए कल्चर आफ पीस था।

4. 12 मई, 2007 को फिजी टुडे पर श्री महेन्द्र चौधरी, माननीय वित्त मंत्री, फिजी और पूर्व प्रधानमंत्री फिजी द्वारा एक व्याख्यान दिया गया।

5. ड्रा नी वायन अरायती, अकादमिक निदेशक, एस आई टी, स्टडी अब्रॉड प्रोग्राम, डारविन यूनवर्सिटी, आस्ट्रेलिया ने 22 मई, 2007 को ट्रांसफार्मेशन आफ एन इन्डिक गॉडेस दुर्गा इन इंडिया, जावा एंड बाली पर एक व्याख्यान दिया। डा. मालिनी सरन ने व्याख्यान की अध्यक्षता की।

6. श्री सतपौल सहाब्दी ने लद्दाख-ट्रान्सफार्मेशन फ्राम मेडिवल टू माडर्न पर 18 जुलाई, 2007 को एक व्याख्यान दिया।

7. प्रतिष्ठित कला आलोचक और इतिहासकार, प्रो. प्रणव रंजन रे ने इंस्टालेशन परफार्मेंश आर्ट इन इंडिया पर 21 सितम्बर, 2007 को एक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर श्री चिन्मय आर. गरेखान, अध्ययक्ष, आईजीएनसीए ने रत्नबाली कान्त (1985-2005) द्वारा प्रतिष्ठापन प्रदर्शन 'एफिमेरल स्टेप्स इन्ड्योरिंग इप्रिन्ट्स' पर एक सीडी जारी किया । रत्नबाली कान्त द्वारा प्रारंभ प्रतिष्ठापन प्रदर्शन के फोटोग्राफ पर एक छोटी प्रदर्शनी देखने के लिए था।

4) प्रदर्शन:

वीणा महोत्सव: आदि श्रव्य पर आइजीएनसीए कार्यक्रम, भारत की विभिन्न संगीत परंपरा से संबधित सामग्री के संग्रह और प्रलेखन पर फोकस करता है। इस कार्यक्रम के अधीन, देश में वीणा परंपरा के प्रलेखन प्रारंभ किया गया और सरस्वती परंपरा पर वीणा महोत्सव 13 से 15 और 21 अप्रैल, 2007 को वीणा फाउंडेशन के समर्थन से आयोजित किया गया। डा. कर्ण सिंह, अध्ययक्ष, आईसीसीआर और आईजीएनसीए के ट्रस्टी ने महोत्सव का उद्घाटन किया।

सरस्वती वीणा परंपरा में प्रतिष्ठित वीणा वादक का फोटो प्रदर्शनी द्वारा महोत्सव को संपूरित किया गया। राजेश्वरी आनंद द्वारा निर्देशित एक फिल्म मेकिंग आफ वीणा इन तंजावुर, भी दिखाया गया। उन्होंने म्युजिक इन द वुड्स - हिस्ट्री एंड ट्रेडीशन आफ वीणा प्लेयिंग पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।

सम्प्रदाय कला क्षेत्र, चेन्नई के निदेशक, प्रो. गीता राजगोपालन ने हिस्ट्री आफ वीणा इन द टेम्पल्स आफ साउथ इंडिया के पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण किया। महोत्सव के दौरान विभिन्न वीणा वादकों ने अर्पण प्रस्तुत किया।

10 से 19 सितंबर, 2007 तक चेन्नई में विभिन्न सभाओं में एक वीणा नवरात्रि फेस्टिवल आयोजित किया गया। द आईजीएनसीए ने अपने अभिलेखागार के लिए दुर्लभ फोटोग्राफ और बीते दिनों के वीणा वादकों के साथ ही समकालीन वीणा कलाकारों पुराने रिकॉर्डिंग और दो फिल्मों मेकिंग आफ ए वीणा तथा वीणा इन साउथ इंडियन टेम्पल्स अधिग्रहीत किया।

जाने माने रूद्र वीणा वादक उस्ताद अली खान, श्रीमती सरस्वती राजगोपालन और कुमार वीणा वेंकटरमणी (दोनों सरस्वती परंपरा के) ने राष्ट्रपति भवन में 21 अक्टूबर, 2007 को विजयदशमी पर महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल के गरिमामय उपस्थिति में प्रदर्शित किया। साथ-साथ 'वीणा फार नेशनल हार्मोनी' आंदोलन के लिए समर्थन दिखाने के लिए संसार भर के कलाकारों ने वीणा वादन किया।

6) बच्चों के कार्यक्रम

मधुबनी शैली की चित्रकला में पंचतत्र की शिक्षाप्रद कहानियों का प्रतिनिधित्व पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया: यह कार्यशाला 10 से 21 सितम्बर, 2007 तक, भारतीय विद्या भवन के 40 बच्चों के साथ आयोजित किया गया। पंचतंत्र की गाथाओं को चित्रित करने वाले, सुंदर चित्रों को बाल दिवस 14 नवंबर, 2007 को एकत्रित किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीमती एंजली इला मेनन ने किया।

7) स्पेशल प्रोग्राम:

स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी के 90वें जयंती और आईजीएनसीए के 22वें स्थापना दिवस के अवसर पर, पंडित राजन और साजन मिश्रा द्वारा श्रद्धांजलि का संगीत समारोह, आयोजित किया गया। समारोह के संपूरक के रूप में श्रीमती संतोखबा दूधत द्वारा प्रियदर्शिनी-आन द लाइफ एंड अचीवमेंट आफ श्रीमती इंदिरा गांधी शीर्षक से 230 मीटर की चित्रित सूची प्रदर्शित की गई। श्रीमती इंदिरा गांधी के याद में राजस्थान के मंगियार गायकों के एक समूह ने गाया।

8) पवित्र कुरान का मलयाली अनुवाद :

दिल्ली चैप्टर आफ डायलॉग सेंटर, केरल के सहयोग से आईजीएनसीए ने 25 नवंबर, 2007 को माननीय रक्षा मंत्री श्री ए के एंटनी द्वारा पवित्र कुरान का मलयाली अनुवाद

जारी करने और फोटाग्राफ प्रदर्शनी 'इवोल्यूशन आफ इस्लाम इन केरल' का आयोजन किया। अनुवाद सम्मिलित रूप से एक हिंदू और एक मुस्लिम विद्वान, श्री वाणीदास इलाएवूर और शेख मोहम्मद काराकुन्नू द्वारा किया गया।

सूत्रधार

कार्मिक

आईजीएनसीए के अधिकारियों की एक सूची अनुलग्नक पर दी हुई है।

सेवा एवं आपूर्ति विभाग

यह अनुभाग कार्यालय के सभी उपकरणों के रखरखाव और मरम्मत के लिए उत्तरदायी है। इसमें आतिथ्य सत्कार, लेखन-सामग्री के वितरण, यातायात, सीजीएचएस और अन्य कार्यालय देखभाल कार्यों के लिए उप-प्रकोष्ठ है।

भवन परियोजना प्रकोष्ठ

आईजीएनसीए भवन परियोजनाओं के निर्माण की प्रस्थिति

भवन परियोजनाएं

1. **पूर्ण हुए भवन-1-कलानिधि, कलाकोश, हिस्सेदारी संसाधन 'ए'; और भवन-2 -सूत्रधारा, भूस्तर तक भूतल पार्किंग 'बी'**

सीपीडब्ल्यूडी द्वारा उपर्युक्त दो भवनों को पूरा करने के लिए एक्सपेंडीचर फाइनेंस कमेटी (ईएफसी) मेमो फार द आईजीएनसी भवन परियोजना, जिसमें 32.88 करोड़ रुपये (जनवरी 2007 को) को पुनरीक्षित आंकलन राशि सम्मिलित है, ईएफसी वाइड नं. एफ. 16-23/2006-अकादमिया तिथि 04/02/08 निम्नलिखित निदेशों के साथ विचार किया गया और अनुमति प्रदान की गयी:

(1) सीपीडब्ल्यूडी समय बचाने के लिए परियोजना से जुड़े टेंडर बुलाने की तैयारी जैसे उपक्रमात्मक सभी कार्य तुरंत प्रारंभ करेगा;

(2) आईजीएनसीए यह सुनिश्चित करेगा कि औपचारिक अनुमति की प्राप्ति पर कार्य के प्रारंभ के लिए सीपीडब्ल्यूडी को स्थल शीघ्रातिशीघ्र उपलब्ध करा दिया गया और वह भारग्रस्तता से मुक्त है,

(3) सीपीडब्ल्यूडी और आईजीएनसीए के प्रतिनिधियों को सम्मिलित करते हुए, समय-समय पर कार्य के अनुश्रवण के लिए संस्कृति मंत्रालय के अधीन अनुश्रवण और परीक्षण क्रियाविधि गठित किया जाएगा। आईजीएनसीए इस बात को सुनिश्चित करेगा कि किए गए निवेश पर अधिकतम वापसी के लिए इसकी गतिविधि को पुनर्शक्ति और उत्तेजित किया जाए।

इसी क्रम में योजना अनुदान 2007-08 के अधीन गैर-आवर्ती खर्च के लिए सरकार द्वारा (संस्कृति मंत्रालय) द्वारा 25 करोड़ रुपये की राशि जारी की गयी, जिसे उपर्युक्त दोनों भवनों के पूरा होने के बाद सीपीडब्ल्यूडी के पास जमा करा दी गयी।

कार्यों के प्रारंभ करने के लिए पहले के ठेकेदारों (मेंसर्स अहलूवालिया कान्ट्रैक्ट्स (आई) लिमिटेड) द्वारा निर्माण स्थल को खाली और उपलब्ध भारग्रस्तता से मुक्त करा लिया गया है।

अतिरिक्त समय और लागत बढ़ने से बचने के लिए निर्माण कार्यों के देखभाल के लिए उचित अनुश्रवण क्रियाविधि निकालने की आवश्यकता के संबंध में, ईएफसी की टिप्पणी में सुझाव दिया गया है कि सीपीडब्ल्यूडी, आईजीएनसीए को परीक्षण के लिए माहवारी भौतिक और वित्तीय प्रगति रिपोर्ट तैयार करेगा। इस उद्देश्य के लिए परीक्षण/पर्यवेक्षण समिति के गठन का सुझाव दिया गया है और गठित किया गया है।

(2) बंगलूरू स्थित आईजीएनसीए के दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय के भवन समूह की निर्माण प्रगति

इस परियोजना पर एनबीसीसी द्वारा खर्च के लिए 2.70 लाख रुपये प्राप्त किये गये । 76 लाख रुपये के कुछ अतिरिक्त कार्य, जो 2.50 करोड़ रुपये के अनुमानित लागत में नहीं शामिल किए गए हैं, बाहर लाने के लिए प्रस्तावित किए गए हैं। इसमें सीमेंट कंकरीट के आंतरिक सड़क; दो मुख्य द्वार; माड्यूलर फर्नीचर के अधिष्ठान और भूदृश्यनिर्माण शामिल हैं।

तीन खंडों अर्थात संग्रहालय खंड, मुख्य खंड और शयनागार खंड के निर्माण की भौतिक स्थिति, जैसा कि 16.01.08 को एनबीसीसी द्वारा बताया गया है, संलग्न कर दिया गया है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
न्यासी मंडल (31.3.2008 तक)

1. श्री चिन्मय आर. गारेखान — अध्यक्ष
   सी. 362, डिफेन्स कालोनी,
   नई दिल्ली- 110024

2. डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन
   85, एस.एफ.एस डी.डी.ए फ्लैट्स
   गुलमोहर एन्कलेव, नई दिल्ली- 110049

3. श्री रतन एन. टाटा
   अध्यक्ष, टाटा सन्स लिमिटेड
   बाम्बे हाउस, 24, गली होमी मोडी
   मुम्बई 400001

4. श्री सलमान हैदर
   ए-3, प्रथम तल
   पूर्वी निजामुद्दीन, नई दिल्ली-110003

5. डॉ. रोदम नरसिम्हा
   अध्यक्ष, इंजीनियरिंग मकैनिक्स यूनिट
   जवाहरलाल नेहरू अद्यतन वैज्ञानिक अनुसधान केन्द्र
   जाकुर पी.ओ. बैंगलोर 560646

6. प्रो. ए. रामचन्द्रन
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग, दिल्ली 110092

7. डॉ. कान्ती बाजपेई
   हैड मास्टर, द दून स्कूल
   माल रोड, देहरादून 248001

8. श्री अनिल बैजल
   ई-524 ग्रेटर कैलाश,
   नई दिल्ली 110048

9. डॉ. के. के. चक्रवर्ती — सदस्य सचिव
   जनपथ, नई दिल्ली 110001

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्य (31.3.2008 तक)

1. श्री चिन्मय आर. गारेखान — अध्यक्ष
   सी. 362, डिफेन्स कालोनी,
   नई दिल्ली- 110024

2. श्री सलमान हैदर
   ए-3, प्रथम तल
   पूर्वी निजामुद्दीन,
   नई दिल्ली-110003

3. डॉ. कान्ती बाजपेई
   हैड मास्टर, द दून स्कूल
   माल रोड, देहरादून 248001

4. श्री अनिल बैजल
   ई-524 ग्रेटर कैलाश,
   नई दिल्ली 110048

5. डॉ. के. के. चक्रवर्ती — सदस्य सचिव
   सीवी मैस भवन
   जनपथ, नई दिल्ली 110001

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
के अधिकारियों की सूची (31.3.2008 तक)

डॉ. के. के. चक्रवर्ती, आई.ए.एस (अवकाश प्राप्त) सदस्य सचिव

सदस्य सचिव का सचिवालय

	श्री जॉय कुरियाकोस	अवर सचिव

कलानिधि

1.	डॉ. आर.सी. गौड़	पुस्तकालय अध्यक्ष
2.	श्री राजेश कौल	कन्ट्रोलर (मीडिया) सेन्टर
3.	डा. गौतम चटर्जी	रीसर्च एसोशिएट एवं लेखक
4.	श्री वीरेन्द्र बंगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड्स)
5.	श्री मसोदा लाल	उप सचिव (प्रशासन)
6.	श्री प्रमोद कृष्ण	वरिष्ठ रिप्रोग्रैफी अधिकारी
7.	डॉ. दिलीप कुमार राणा	अनुसंधान अधिकारी
8.	डॉ. कीर्ति कान्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
9.	डॉ. कल्पना दास गुप्ता	सलाहकार

कलाकोश

1.	प्रो. जी. सी. त्रिपाठी	प्रो. एवं विभागाध्यक्ष, कलाकोश प्रभाग
2.	डॉ. एन. डी. शर्मा	एसोशिएट प्रोफेसर
3.	डॉ. अद्वैतवादिनि कौल	सम्पादक
4.	डॉ. राधा बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. बी. एस. शुक्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
6.	डॉ. बच्चन कुमार	अनुसंधान अधिकारी
7.	प्रो. मन्सुरा हैदर	सलाहकार

वाराणसी कार्यालय

1.	प्रो. के. डी. त्रिपाठी	अवैतनिक समन्वायक
2.	डॉ. उर्मिला शर्मा	सलाहकार (शैक्षणिक)

जनपद सम्पदा

1.	प्रो. बी. के रॉय बर्मन	अवैतनिक सलाहकार
2.	डॉ. मौली कौशल	एसोशिएट प्रोफेसर
3.	डॉ. बी. एल. मल्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ. रमाकार पन्त	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. जी. एल. बादाम	वरिष्ठ सलाहकार

कलादर्शन

1.	सुश्री सबीहा ए जैदी	कार्यक्रम निदेशक
2.	श्री सुरेश पिल्लई	सलाहकार (डायस्पोरा)

सूत्रधार

1.	श्री अजय नारायण झा, आई.ए.एस	संयुक्त सचिव (प्रशासन)
2.	श्री संजय कुमार ओझा, आई.एफ.एस	निदेशक (प्रशासन)
3.	श्री पी. झा	निदेशक (एम.एम)
4.	श्री पी. आर. नायर	मुख्य लेखा अधिकारी
5.	श्री बी. एस. बिष्ट	लेखा अधिकारी
6.	श्रीमती मंगलम स्वामिनाथन	उप-निदेशक (आई एण्ड पी आर)
7.	श्री. टी. अलायसियस	सलाहकार
8.	श्री. आर. पी. गुप्ता	सलाहकार

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलोर

1.	प्रो. एस. सेतार	अवैतनिक समन्वायक
2.	डॉ. जी. ग्याननन्दा	सलाहकार

उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी

1.	प्रो. ए. सी. भगबती	प्रधान अवैतनिक समन्वायक

राष्ट्रीय हस्तलिपी आयोग

1.	पं. सतकारी मुखोपाध्याय	सलाहकार
2.	श्री. के. के. गुप्ता	सलाहकार

इ.गा.रा.क. केन्द्र के वरिश/कनिश अनुसंधान अधयेता

कलाकोश

1.	डॉः सुजाता रेड्डी	कनिष्ठ अनुसंधान अधयेता

वाराणसी कार्यालय

1.	डॉ. पार्वती बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अधयेता
2.	डॉ. रमा दुबे	कनिष्ठ अनुसंधान अधयेता

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना जी.ओ.एम.एल. चेन्नई)

1.	डॉ. एस. सूंद्रानधियन	परियोजना समन्वायक
2.	श्री. जे. मोहन	वरिष्ठ अधयेता
3.	श्री. पी.पी. श्रीधार उपाधयाय	वरिष्ठ अधयेता
4.	श्रीमती वी. पारवथम	कनिष्ठ अधयेता

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना जी.ओ.एम.एल. अलवर)

1.	डॉ. सर्वेश कुमार शर्मा	परियोजना समन्वायक
2.	डॉ. (श्रीमती) रमा शर्मा	वरिष्ठ अधयेता

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची

पुस्तकें

प्रो. बी. एन मुकर्जी न्यूमिस्मेटिक आर्ट्स ऑफ इंडिया (दो भागों में)

भोजकृत 'श्रृंगारप्रकाश '

'श्वेन त्सांग जैंग एण्ड द सिल्क रूट '

'कलाकल्प' द आईजीएनसीए जरनल

'मनु ऑन वूमेन'

'जग्गी देवी, द फ्रीडम फाईटर ऑफ उत्तर प्रदेश '

'भगत बानी-श्री गुरू ग्रन्थ साहिब द वर्ड एण्ड इट्स रोमान्स '

सीडी रोम

ए डाइलॉग विद वुमेन प्रीस्टेस ऑफ लेपचास

दि जरनी ऑफ भिकुनीस

ब्रह्मवादिनीज़: दि फर्स्ट वुमेन्स गुरूकुल इन इण्डिया

रिकलैक्शन ऑफ ए सत्याग्रही

दि मीरासंस ऑफ पंजाब बोर्न टू सिंग

दक्षिणी कन्नड-लैण्ड ऑफ दि मदर गॉडेस

सीकिंग मोक्श: दि वैश्नवीस ऑफ वृन्दावन

भगत बानी फ्रॉम श्री गुरू ग्रन्थ साहिब

अकीदत के रंग

गोन्डी रामायण का हिन्दी संस्करण

एलिजाबेथ सास और एलिजाबेथ ब्रूनर के द्वारा बनाए गए चित्रों की प्रदर्शनी की सूची